



नये साहित्य-संघ

सम्पादक सच्चिदानन्द वात्स्यायन

# काठ की घण्टियाँ

[ कहानियों, कविताएँ, उपन्यास ]

सर्वेस्वरदयाल सकसेना



भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला हिन्दी ग्रन्थाङ्क—८७

ग्रन्थमाला सम्पादक

लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रकाशक

मन्त्री भारतीय ज्ञानपाठ

दुर्गाकुण्ड रोड वाराणसी

प्रथम संस्करण

१९५९

मूल्य मात्र रुपये

मुद्रक

वाञ्छुगण जन पाण्ड

समिति मुद्रणालय वाराणसी

## भूमिका

अपनी पहली पुस्तक प्रकाशनसे लेखकका जा आनन्द हागा उसकी गुफता अथवा गम्भारताका उपजा किये गिता मैं यह कहना चाहता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थका प्रकाशन मेर लिए उससे कम आनन्द गायक नहीं है। बल्कि उसमें एक ऐसा सन्ताप भी है जा कि लखकक सन्तापसे त्रिकुल भिन्न कानिका हाता है उसका आधार स्वल् अरन कृतित्वमे विश्राम नहीं बल्कि एक ममूने साहित्यमें आस्था हाती है—जिममें अरन अलावा दूसरोंका कृतित्व भी सम्मिलित है।

वास्तवमें 'नय साहित्य घण्टा' नामक इस ग्रन्थमालाका आरम्भ ही इस गायक आस्थाका प्रतिबिम्ब है। दिग्गज समवर्ती जिन युगम बुजुगोंने नया रचनाने प्रति द्वाभ प्रकट किया और मध्य-वयन लक्षणों गति राषकी दुगाइ गी, पुरान आलाचकीने शारन मारताय मूल्योंका उपजाका टुगडा राधा और नय आलाचकीन आगबुध विदेशा परिभाषाभोंन देशी प्रतिभा का दबा दनका उपक्रम किया, उसमें यह जन उन थाडेस ब्यक्तियोंमे से रहा जिहांन नयी साहित्य प्रतिभामें विश्राम नहीं खोया आर जा उनका माग प्रशस्त करेन लिए भरसक उग्रम काने रह—भीर शक्ति धरन अधिक भत्सना सहते रह। इस परिश्रमका उसन सही और कचय्य समझा ता कवल अदकारयश नहीं, इत्तलिए कि उसने अग्रुमर किया कि मम कालन परिस्थितिमें कवल रचना कर देना पयात नहीं है, उसन अनुकूल परिस्थितियोंन लिए सधय करना मा आवश्यक है।

'नय साहित्य घण्टा' ग्रन्थमालामें क्रमश ऐम साहित्यकारोंकी रचना पाठकक सम्मुख उपस्थित करना अभाष्ट है जिहोन न स्वल् नयाया रानक या अद्दा दुद्ध जिवा है, वरन् जिनका साहित्यिक कृतित्व उस सधयका

भी प्रतिनिधित्व करता है जो इस कालके साहित्यकारको अपनी निष्ठाकी रक्षाके लिए और अपने कला मूल्याकी प्रतिष्ठाके लिए करना पड़ता रहा । यह नहीं कि ऐसे सभी ललक इस मालामें आ जायेंगे— जिनकी रचनाएँ स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित हो चुकी हैं या हो रही हैं वे इसमें नहीं भा लिये जा सकते हैं, क्योंकि एक आर उसकी कान् आवश्यकता भी नहीं है और दूसरो आर उससे न कितनाकी क्षति हानवाली है, न किमीत्र प्रति अन्याय ।

यह इस सघषकी बहुमुखता और जलितताका एक चिह्न है कि समरता कृतिमार प्रायः एकसे अधिक माध्यममें रचना करते हैं । ऐसे लेखक कम हैं जो केवल कहानाकार, या केवल कवि या उपन्यासकार या नाटककार या आलाचक्र हों । यह निरा 'रूपनमोला' होनाका शोक नहीं है, न अनुशासनहीनता अथवा अराजकताका चिह्न, न साधनाकी कमा अथवा गुरु शिष्य पद्धतिकी उपज्ञा । और यह भी एक अत्यन्त एकांगी सत्य है कि अगर कहा जाय कि आर्थिक कारणोंसे कृतिमारका सभा तरफ की चीजें लिखनी पड़ती हैं । यदि कवि लोग कहानियाँ और रेडियो रूपक लिखन लगते और समीक्षक नाट्यकार ( पाठ्यक्रमापयोग ) हो जाते और बात वहीं तक रह जाती, तो तो आर्थिक प्रभावकी प्रधानता माननी पड़ती । पर ऐसे भा उत्पन्न अनेक मिलेंगे जहाँ सफल कहानीकारान कविता लिखना आरम्भ किया है और आग्रहपूर्वक कविता लिखते हो चले गये हैं—यद्यपि कविता-जसे कुछ आय नहीं हाती रही है जब कि कहानियाँका माँग बराबर बनी रही है और उनके लिए पशगा पारिश्रमिक पा लेना भी असम्भव नहीं रहा है ।

यह बहुमुखता इस प्रथमालामें प्रतिबिम्बित हो, यह उसका उद्देश्यका स्वाभाविक परिणाम है । बिना उसका वह कैसे समकालीन सघषों और प्रवृत्तियाँका प्रतिनिधित्व कर सकता ? पर वह इसलिए भा ग्राह्य और अभिनन्दनार्थ है कि इस प्रकार वह प्रत्यक्ष प्रथम एक प्रातिकर विविधता दे देती है । एक पुस्तक एक साथ ही एक साहित्यकारका पूरा प्रतिनिधित्व

भी करे, और नाना रस यत्रनामे पाठककी रसनाको लुभाये और तृप्त भी करे यह सम्भावना इस अथमालाका न केवल अपने तर्कका एक मात्र प्रयाम बना देता है वन् आजका स्थितिमें एक महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान् प्रयोग था। पाठक-वर्ग, आशा है, इसे इसी रूपमें ग्रहण करेगा।

'काव्यका घण्टियाँ' का लोकार्पण भी उन दिनोंसे ही था पहले कानाकारक रूपमें सामन आये। विश्वविद्यालय-जीवनमें ही कहानियाँ प्रतियोगितामें पुरस्कृत होनेका सर्वेश्वरजाक लिए ऐसा काइ लोकार्पण नहीं था कि यह कहानियाँ प्रकाश करिताएँ लिखने लगे। सन् १८४३ में १९५० तक यह कहानियाँ ही लगभग थी। सन् १८५० में उद्योग करिता दिवना आरम्भ किया तब ऐसा भी काइ कारण नहीं था कि यह कहानियाँ लिखना छोड़ दें—अर्थात् बाहर काइ कारण नहीं था आन्तरिक बाध्यताएँ ता कलाकारक जीवनका अंग हो सके।

तीन-चार वर्ष का समय अन्तरालक बाद उद्योग फिर कुछ कहानियाँ लिखीं। 'साया हुआ जल' नामका लघु उपन्यास या लम्बा रूपकथा भी इसी समय लिखी गया। उससे अनन्तर फिर चार-पाँच वर्षका कालान्तराल रहा, जिसके बाद फिर कुछ कहानियाँ और एक (अथवा डेढ़) नया उपन्यास लिखा गया।

ऐसा क्यों हुआ? इसका पड़ताल निम्नलिखित लेखकक कृतित्वक अध्ययन और मूल्यांकनके लिए उपयोगी होगी अपने आपमें भी यह रोचक हो सकता है। किन्तु इस भूमिकामें उसमें जाना आवश्यक नहीं है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि प्रत्येक संपादनकी रचनाएँ पढ़नेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखकन न केवल माध्यम बदला है बल्कि उसको सर्वेक्षणका स्तर और उमकी शिक्षा प्रकृत गयी है। इस प्रकार कहाना लेखक कुछ वर्ष कविता लिखकर अब फिर कहानोका आरंभ करेगा है ता फिर उसी रूपका नहीं उगाता जिस वह छोड़ गया था, बल्कि एक नया

प्रदेशमें नयी राहपर चलता हुआ अपनेका पाता है। इसी प्रकार कवि जगत् गद्य लेखनका अन्तरालके बाद फिर काय क्षेत्रमें लौटता है, ता वह भी एक नये आयाममें।

इनमस कुल परिवर्तन ता साध साध वयस्कताका परिणाम हा ही सन्ने हैं। आरम्भकी कहानियोंमें हम अगर 'प्रसाद' की ( यद्यपि अधिक सामाजिक प्रसाद' का ही ) अनुगूँज पा सकते हैं और आरम्भिक कवितामें सीधी सहज भाषामें गीत लिखनवाला 'प्रबन्धन की छाप, ता यह अस्वाभाविक नहीं है। किन्तु क्रमशः कृतिकारका अपना यत्नित्व विशद और पुष्टतर हाकर सामन आता गया है और बादकी रचनाओंमें हम ता अन्तर देखत ह—विभिन्न माध्यमिका अथवा एक ही माध्यमकी पृथक्पर रचनाओंमें वह 'क' और 'स' क प्रभावका अन्तर नहीं है, वह असन्दिग्ध रूपस सपश्यर का ही सञ्चानाका विभाजन पहलू हैं अलग अलग परिस्थितियोंक साथ एक ही, किन्तु अनेका मुख, सञ्चानाका घात प्रतिघात क नाना रूप परिणाम।

सर्वेश्वर इन परिवर्तनका प्रति कर्षों तका सजग ये यन् नहीं कहा जा सकता। न उस सजगताका तत्काल हाना या न हाना ही पाठकके लिए काइ आत्यन्तिक मद्दत रपता है। और न इस सम्बन्धमें प्रकृत किये गये लक्ष्यक अभिमतका ही ज़रूरतस ज़्यादा महत्त्व देना चाहिए। कृतिकार अपनी कृतिकारमें जा कुछ कहता है उसका ठीक ठीक समझना या सह्य गारव देना भी उतना हा दाल्घिन्य माँगता है, जितना कि नारीकी अपने रिषयमें कही गयी बात। दानों ही बातें अथहीन कभी नहीं हातीं, लकिन दानाका हा अभिप्राय वह नहीं हाता जा शब्दोंमें अभिहित हा। इसलिए सर्वेश्वर अगर कहने हैं कि 'जब वह गीतकी परिपाटी छाडकर एक नये प्रकारकी कविता लिखन लगत त त उहें इसका भान नहीं था कि वह एक परती क्षेत्रमें प्रवेश कर रह ह या नयी भूमि ताड रह हैं', तो आवश्यक नहीं है कि इस सच मानकर भी तत्पश्चात् ग्रहण किया जाय।

इसी प्रकार अपनी कायमय कहानियोंकी उनकी टी टू यह सफा कि 'हमने साचा था कि कहानी नहीं लिखेंगे, इसलिए जा कहाना लिखा गया वह कवितामय हा गया निराधार न हाफर मा 'यांकी'त्या ग्राह्य नहीं है ।

अगर मैं यह कहूँ कि मैं सपत्नका पहल कवि मानता हूँ, तो यह न समझ जाय कि मैं उनकी कहानियोंमें प्रभावित नहीं हूँ बल्कि उनकी इधरकी कहानियों और 'पागल कुत्तोंका मसाहा' नामका नया सामाजिक लघु उपन्यास महा दृष्टिमें नय कहाना-साहित्यमें एक विशिष्ट ध्यान रखत हूँ । उन्हें पहल कवि माननेमें मैं उनकी रचनाका मूल्यांकन नहीं बल्कि उनकी सर्वेक्षण प्रकारका निरूपण करना चाहता हूँ । अनुभवका स्तर— भावा सपत्नका और भाग्य परिकृतन आपसी सम्बन्धका स्तर—कविताका है कविता कि सत्यम प्रयाजन है, वह उसी क्षेत्रमा है । मैं कहना चाहता हूँ कि अरना सामाजिक दृष्टि, और अरना रचनाओंमें सपत्नशास्त्र गहरा सामाजिक चेतनाके आवतू सर्वेश्वरका सप प्रथम अनुभवस प्रयाजन है, सत्यमसे करल आनुपगत रूपसे ।

छात्रावद्ध 'यग्य रचनाएँ, जिनका 'याम सामाजिक पालण्डोंसे लेकर राजनीतिक मतवादों तक फैला हुआ है, यहाँ अरना-रूप जान पड़ेगा । किन्तु जब भी कविताके साथ को विशयण लगता है—और उस विशयण का औचित्य मान लिया जाता है—तब वह विशेषण अनिषाय भी हा जाता है, और उस प्रकारकी कविताका निर्विशय्य रूपस कविता नहीं कहा जाता । जिस हम 'सैगिरिक पाण्डा' कहते हैं, उस श्वल 'सैगयर' भी कह दने हैं किन्तु कयल 'पाण्डा' निर नहीं कहते । इसलिए सर्वेश्वर जीक बारेमें महा अरचारणा 'यांकी' त्यो रह जाती है । उनका तावा 'सैगयर' जा गय और पच दानों रूपोंमें प्रकृत हुआ है उनक कवि रूप की प्राथमिकताका अखिदन नहीं करता ।



कवि और कहानीकार दानां ही देश-कालसे बंधे हैं। किन्तु निरपवाद होनेका आग्रह न किया जाय ता यह कता जा सक्ता है कि कहानाकारकी दृष्टि देशका आर अधिक रहती है और कविन कान कालकी भनकार की ओर अधिक लगे रहते ह। दूसर शब्दोंमें कहानाकारका सद्भ समाज और उसका विस्तार हाता है, कविका सद्भ जीवन और उसकी गहराइ ।

एस दृष्टिसे भी सर्वेश्वर पहल कवि हैं। उनकी कहानियां और उनका उपयासीकी प्रवृत्ति भी गहराइकी पडताल का है। ग्राह्य वास्तविकताकी उपजा या अवशा कहीं नहीं है, किन्तु ललककी दृष्टि उसीसे उलभकर रह जानेका तैयार नहो। इसालिए उनका गद्य रचनाओंमें भी एक प्रकारकी कायमयता है। गद्यमें भी यथाथको मूक्त करनेका उनका साधन कविके साधन हैं। रूपाकारमा दणन वहाँ प्रधान नहीं है और विग्र अथवा सरेत ही यथाथका दशाते नही अग्रगत कराते हैं। निस्सदेह इसका एक कारण यह भी है कि कहानियांमें भी कविताकी भाँति सर्वेश्वर 'जीवीयता' उसका पद्ये 'जा' उससे व्यस्त हैं और उस उभार अथवा ठघाडकर सामन लाना चाहते हैं। यह नहीं कि जा टालता है जा सत्य ही है, उस वह मिथ्या या अयथाथ मानते हैं—बलिक स्वय मिथ्या भी श्रयथाथ नहो हैं। फिर भी आकारोकी भिल्लामें जो अभिप्राय रँधा हुआ है और घुन रहा है वह मुक्त हाकर हमारे सामन आवे, यही उनका आग्रह है और इसीमें सफलता उनका निकर साहित्यिक कृतिकी सफलता है। एसी लिए जहाँ उनकी रचनाओंमें परिस्थितियाँ प्रति विद्राहका भाव और परिवतनका आकांक्षा है, यहाँ यह स्पष्ट है कि यह आरका बल देनेसे ही सन्तु नहो है। उनका यथाथ समझत हुए वह 'भीतरसे बलन पर बल दत हैं। और इस 'भीतर' न अभिप्राय बल अथचेतन यथाथस नहीं है जैसा कि माया नुभा जल क बुद्ध अशोस ( और शीवकसे भी ) प्रनित हाता है 'भीतर' वह है जा धादरक साथ रागात्मक सम्बध

चोड़ता है और उन सम्प्रदायों मूल्यों का अन्वेषण करता है। क्योंकि बचलना मूल्यों का बचलना है, इसलिए नये रागात्मक सम्प्रदायों की प्रतिष्ठा आवश्यक है और उसक लिए बाहर और भीतर दोनोंमें नान्ति बाद्धित है।

क्या सर्वेश्वर का रचनाएँ 'समकालीन' हैं? जिस लक्षण की कृतियाँ स्पष्टतया समकाली परिदृश्यम सम्बद्ध होती हैं—अपने समय का सामाजिक परिवर्तन जिनमें स्पष्ट निरूपित होता है उन्हें समकालीन मान लेना आसान होता है। लेकिन जिनकी सचेतना समकालीन यथायथासे कालक आपातमें सिद्धता चाहता है उनका बारेमें इस प्रश्न का उत्तर देना इतना सरल नहीं होता। सर्वेश्वर की अनेक रचनाओं के आधार पर यह तो अभी नहीं कहा जा सकता कि आन्तक सामाजिक यथार्थ पूरी तरह उनका परचममें आ गया है, कि उसका चिन्तन का उद्देश्य नाप लिया है लेकिन इतना बिना सनाच कहा जा सकता है कि उनकी सचेतनामें समकालीनता का स्पन्दन है। दूसरे शब्दोंमें समकालीन यथार्थ उनकी मुद्रा की पकड़में आ गया है, उनकी चेतना द्वारा अन्तर्गम नाप लिया गया है। और ऐसी रचनाएँ तारकालिक प्रभाव की दृष्टिसे मर्यादित होने पर भी मर्यादित गुण उन्में अधिक होता है।

मरा विश्वास है कि "काण्डा घण्टियाँ" एक नये साहित्य युग का नयी सृष्टि हानक नाते ही सम्मानित न होगी बल्कि लक्षणक और उसकी रचनाओं का पुरान पढ़ जान पर भी अपनी ताज़गी और शक्तिसे पाठकों का प्रभावित करती रहगी। प्रस्तुत सफल उनका प्रायः बारह वर्षक लक्षण का व्यास नापता है इसमें भी विकासने लक्षण स्पष्ट हैं, किन्तु और भी ताज़ा लक्षणमें—सुभक्त भाग्यशाली का जिनमें हस्तलिखित रूपमें पत्रिका मुद्रा मिली है, और जो मैं आशा करता हूँ अब शीघ्र प्रकाशमें आयेगा—सर्वेश्वर जिन साहस और सामर्थ्य का साथ आगे बढ़ें, वह उनका मार्गी सुषण की प्रतिभा तो है ही हमारे साहित्यक लिए भी आशाका सबत है।

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

# अनुक्रम

भूमिका ( सच्चिदानन्द वात्स्यायन )	३
कहानियाँ	
दूबना हुआ चाँद	१६
सानर पून	३८
कमला मर गया	४७
टूट हुआ पत्त	७०
बबसा	८७
प्रेम विनाह	९९
मौतकी छाया	११६
स्नेह और स्वाभिमान	१२६
पत्थरन फूल	१३६
वह चित्र	१४४
मौतका अर्ध	१५४
द्विजिन पार	१६६
रूप और श्वर	१७७
निन्दगा और मौत	१८६
द्विजिन मातर	१९६
बरमात अब भी आता है	२०३
भगतबा	२११
मास्टर श्यामलाल गुना	२२०
पुलिकानाला आदमा	२२५
मामाएँ	२४६

## कविताएँ

जत्र कलम उटाता हूँ	२५७
य ता परछाड़ है	२५६
मने आगज दी है	२६१
यह सौंभ	६४
अँवरेका मुसाफिर	२५७
अजनबी देरा है यह	२६८
यह भी क्या रात	२६६
मुहागिनका गीत	२७१
उत्तर	२७४
त्रिपराता	२७६
रात भर	२७७
माँकी याद	२७८
बीसवीं शताब्दी एक कविकी समाधिपर	२७६
एक प्यासी आमाका गीत	२८७
कुलभरियाँ छूटीं	२८६
टन धिरता नही	२६०
कौन है ?	२६१
शान्तिमयि तुम हा	२६२
शान्त - रागमुग्धी-भी तुम	२६४
त्रिगत प्यार	२६६
अहसे मरे बन्ना हा तुम	२८८
तुम कहा	३००
चुन रहा	३०३
चाँकी नीन	३५
चाँनाम कहा	३६

श्रावण पहला वार	३०८
कल रात	३१०
मर	-३१
सध्याका भ्रम	३१०
गायिका शामका सहर	३१५
एक नयी प्याम	३१७
दा अगरीकी बत्तियाँ	३१८
प्रेम-नर्तन तारा	१२१
लियन रजाँमें	३२८
पख दा	३३०
नये घण्टर	३३१
बनारका गात—१	३४०
"    —०	३४४
"    —३	८
"    —६	३४७
सायनका गात	३६८
मूलाका गीत	३५०
चरगर्हाका युगल-गान	५१
भाँधी-पानी आया	१५०
गात रह गया लेकिन का	३५५
युग-जागरणका गात	५६
खाली मनपमे	३५८
ताँबक फूल	३६०
घाम बानकी मरान	३६३
नाग अन्नगर	३६५
पान पैगाडा	६७

कलाकार और सिपाही	३७१
बब्रीका टैंक	३७३
आटेकी चिडिया	३७५
सिपाहियोंना गीत	३७६
थरमस	३७८
सुबह हुई	३७९
पास्टर और आत्मी	३८१
खाली नेत्रे, पागल कुत्ते और बासी कविताएँ	३८४
तेज़ासे जाती हुई	३९१
सामाजिक अभियक्ति	४९२
सकलनेरी गाडी	३९३
काफी हाउसमें एक मलाद्रामा	३९६
चुगाई मारौ टुलहिन	४ २
दा नक सलाहें	८ ८
सौन्दर्य बाध	४ ९
आत्म साक्षात्कार	४११
प्लेगफाम	४१७
मध कुल्लु कइ लनर चाट	४२३
मैंन कब कदा	४२५
काठरी घण्टियाँ	४२७
<b>उपन्यास</b>	
साया हुआ जल	४२९

स्वर्गाया मॉ नऱ





बरसात अब भी आती है

[ कहानियाँ ]



## डूबता हुआ चाँद

कोई विश्वास न करे या न करे, लेकिन मैं सच कहता हूँ, कि उमका ज़ुल इतना ही लोप था कि वह गोगी न थी। वह किमी अभिगापकी बन्लीकी छौहसे साँवली थी। यों उसकी आँख बड़ी-बड़ा थी। अपनी बन्द पल्कोको जब वह खोलती थी, तो लगता, जैसे सपनोकी पखुरिया पर मामूमियत लहरा गयी हो, मुसफराती थी, तो जैसे बेजमीनी जज़ीरें टूट रही हों, और खोलती थी, तो उस स्पन्दनहीन, शान्त, मधुर, स्वरको सुनकर लगता, जैसे किमी स्वामोश गहरे-नीले ममुद्रमें चाँद डूब रहा हो। वह ग़ाहर-भाँतर हर ओर सुन्दर थी, रूपके माँचेमें ढली हुई, अमृतके सरोवरम नहायी हुई। लेकिन वह गोगी न थी। उमका साँवलापन, उसका नम-नसम, एक ज़हरीला ढद जन का उमडा करता था, पर उसने कभी उसे अधराँ और आँखोकी राहमे छलकने नहीं दिया। उसके पति एक धनी पण्डा थे। आँखोकी कमचोरी आगे दृञ्च मोटे चश्म के शीशेसे दूर होती थी और निमागकी चिडचिडाहट पनी या घोडेकी पीठमे। उसके पाम एक रूसी ठाटका एका था, जिसका गान सिकोमीके मेलेके समय निम्बगती थी। घोडेका नाम था नगान। डलाहानादम वैसा घोडा कोर्ट दूमरा नहीं था। शहरभरमें उसकी शोहगत थी। उसके दिलमें पन्ना और घोडेका वनन गगनर था। घोडेके लिए भी उसने सोने और चाँलके ज़ेवर बनवा रखे थे और नौकर रख रखे थे। उसका घोडा भी ठण्डई और घी पीता

तुम्हें क्या मालूम कि तुम्हारे यहाँ न खानेमें वहाँ मॉका कलना खुरचता हागा ।”

और मैं इस वाक्यको सुननेमें अधिक उनके मुखकी ओर देख रहा था निम पर स्नेह भरे उपालम्भका गम्भीर दर्दाली छाया थी । उसे देख कर मे पानी पाती हो गया । एक ओर मैं उनकी वादम तेइस सालका जबाना, भरे कच्चे शहतूत-सी उमर देगता और दूसरी ओर न्न बुजुर्गियतकी बातका अर्थ सोचता । जो अभा तरु मॉ हुइ भी न नो वह मॉक कलेनेकी बात क्या समझ ? मैं कुछ खन्ने हा जा रहा था कि वह बोल उठी—

“अफेळ पडे खन्ते हो, धर उधरका सोचते होगे, तमीयत घडडाता नोगा ।” मैंने कुछ दनी जवानसे इस वाक्यम निहित सचाइको टालनेका गरजमें क्या—“नहा तो ।”

वे बोलीं—“मुझमें छिपाओ मत । घरकी चहारदीवारीम बन्द रहने पर भा हम लोग आत्माका नम-नम समझती है ।”

मैं चुप रह गया । वे फिर कुछ मुसकरा कर बोला—

“मैंने तुम्हारा खाना भा बना लिया है, बुरा तो नहीं है, खा ता लोगे हा मेरे हाथका ।”

मैं शरममें गड गया ।

वे बोलीं—“गरम किम बातका । कभा-कभा सुम्नी आ ही जाना है । मैं हा दवा जममें व गये है बम दिनमें एक हा बार खाना बनाना हूँ । अखन्ने छिप इतना शक्य कौन करे ? फिर यथा ता त्तिन भर घरमें हा पडा रहना पवता है । तुम लाग पढ़ने त्तिनन वाक खन्ने टालने स्वाआगे नहीं तो पढ़ोगे क्या ? अपने

ग्याने-पीनेका ग्याल करो। खुद जी न किया करे तो मेरे पाम चन् आया करो, मैं बना लिया करूँगी।” उनकी बात सुनकर मेरे निमागमें एक वाक्य घूम रहा था—“मनेह और महानुमृत्तिकी क्रीमत वही समझ सकते हैं, उनमें ही मिल सकती है, जो इसमें जीवनमें वज्रित हों।” मेरा हृदय कुछ भर-सा आया। मैं किसीकी उपमा सह सकती हूँ, क्योंकि इसका आती ने गया हूँ, लेकिन किसीका प्यार मेरे लिए अमह्य हो जाता है। मैं कुछ भगी-सी आवाजमें बोली—“इतना ही बहुत है, इससे अधिक तकलीफ मैं आपको किस अधिकार पर दूँ, और अगर दूँ भा तो उस एहसान का बदला कैसे दे सकूँगी?”

वे कुछ गम्भीर हो गया। बोलीं—

“तुम लोग पढ़ लिख कर भी ऐसी बातें करने हो। कोट किसी पर एहसान नहीं करता। एहसानका बोझ वो मानते हैं जो स्वाथा होते हैं, चिनका हृदय उदार नहीं होता। मेरे एहसासका बदला देनेको क्या इतनी बड़ी टुटिया कम है तुम्हारे लिए? और अगर मुझे ही बदला देना चाहते हो तो मरने पर मेरी लग पूँक आना।”

उनके ये एक एक वाक्य तारमें मेरे कानोंमें चुभ गये और आन तक चुभे हुए हैं। मैं कैसे बताऊँ कि उस दिन एक मामूली पढ़ा लिखी नाराजे सामने मैंने अपनेको कितना छोटा मन्मूस किया था।

मन ग्याना ग्या लिया और फिर तो अस्मर जब वे अपने लिए खाना बनातीं, मेरे लिए भी बना लेनीं, और फिर मुझे बिना चूँ-

चपड क्रिये हुए खा लेना पडता । अक्सर मेरा बना हुआ खाना नौकरको दे दिया जाना और मुझसे कह देतीं—“क्या बना पाते होगे तुम ? खूया-खूया बिना नमक मिचका ।” मैं इसका क्या जवाब देता । एक बार शायद कुछ कहा भी तो बोल उठा —

“हम लोगका ज़िन्दगी ही खाना बनाते बीतती है । पेना होनेसे लकड़ मरने तक चूल्हा हम लोगसे नहीं छूटता । जानते हो हम औरताना सनसे बड़ा साथी इस जीवन्म कौन होता है ? चूल्हा ।” और हँस पडा । मैं निरुत्तर हो गया ।

उन्का स्वास्थ्य अक्सर निगडा रहता । एक दिन वे खाना बना रहा था । उस दिन शायद तबायत अधिक खराब थी । चौके मैं ही चक्कर आया, गिर पडीं । खाने पाने पर जत्र मैं पहुँचा तो वे चारपाई पर पडी थीं । नौरानी बैठी पखा झल रही थी । मुझ देखते ही मुमराने लगीं, वही बेवमीकी मुसकराहट । मुझ उन्हें दम्बर कुछ तन्गीफ हुई ।

‘तुम इतनी बीमार रहती हो, अपना दवा क्या नहीं करतीं भाभा ?’ मैंने कहा ।

वह एक फाफा हँसा हँसकर बोली—“क्या करना है ?”

मैंने कहा—“क्या खून रही, वामार पने रहना अच्छा लगता है । मुझ ता इतना ममझता हो, खुद नहा समझनीं ।” वह चुप रग ।

मैंने इतन दिनमे प्राप्त मन्त्र अत्रिकारका प्रयोग करते हुए कहा— अगर तुम अपना रोग नहीं दरोगा तो मैं तुम्हाग कोइ करना नहीं मानूँगा और न तुम्हारे हाथका ग्राहका ही । यह नहीं

हो सकता कि तुम मर-मर कर बनाया करो और मैं साया  
रूँ।”

मेरी बातें सुनकर उनकी आँसों छलछल आया। क्यों, यह मैं  
कैसे बताऊँ ? उन्होंने केवल इतना कहा—वह भी एक झमी हुई  
आवाज़में—

“तुम क्या जानो ? औरत अपनी दवा अपने-आप नहा कर  
सकती।”

मैं इस कथन पर सोचता रहा, मेरा दिल उमड़ता रहा। बार-  
बार मनमें आता, औरतको क्या इतना भी अधिकार नहा है ?  
जब कि वह सैन्डो रुपये महीने पानीकी तरह जुए और पेंगमें  
जडा दते हैं, क्या इनकी पाच पैसेकी दवा नहीं कर सकते ?  
लेकिन उत्तर कौन देता ?

मैंने पता नहीं क्या सोचते हुए कहा—“तुम महरानिन क्यों  
नहा रग लेती हो ?”

उन्होंने एक रूखा जवाब दिया—“महरानिनके हाथका हम  
लोग नहीं खाते।” और मे इस कथनकी सत्यताके बारेमें सोचता  
रहा। जब कि पण्डा महाराज रेम्पों और अग्रेनी होटलमें रुक छिप  
कर चर्र मार सकते ह और यह भी छुआछूतका इतना दोग नहीं  
रचती। फिर बात क्या है ? बादमें नौकरानीमें जात हुआ कि  
पडाजी महरानिनका खर्च एक बेमारका खर्च समझते हैं, जबकि  
घरमें एक पत्नी है चाहे वह मर ही क्यों न रही हो ? उनके इस  
रूपे उत्तरसे मुझे उस समय लगा जैसे मुझे यह प्रश्न नहीं पृथ्ना  
चाहिए था। मैंने बात बदलते हुए कहा—



“तुम्हारी तबीयत कससे खराब है—भाभी ?” उहाने मरी तरफमे मुँह फेर लिया, नेमे उहे मेरा यह प्रश्न निरकुल अच्छा नहीं लगा और स्वामाग रहा ।

मेरे मुखमे निरुल पडा—“नहा बताओगी ?”

वे चुप रहा । मैने कहा—

“अच्छी बात है !” और उदास उठ कर जाने लगा । मेरे जानेका आहट पाकर वो कुठ भारी आवाजमें बोली—

“खाना खा ले—मैने तुम्हार लिए हा बनाया है, नहीं तो चुनटका खाना मेरे लिए रक्खा था ।”

मै दन्से तिलमिला उठा । इस बामाराम मेरे लिए खाना । मेरे मुग्गमे निरुल पडा—“मै नहा खाऊंगा !” और मै तेजासे उपर चला गया । जाकर मस्तिष्कमें एक दर्द भरा तूफान लिये हुए चारपाद पर गिर पडा ।

थोडी देर गल, नौकराना थालालिये हुए आयो और मेरे सामने रक्खा हुड बोली—“उहाने क्या है, उह मेरा कमम है—खा लें ।”

मै चुपचाप खाने लगा और नौकरानी बताने लगा कि किस तरह उन उनके पन्में दो मन्नेका रक्खा था तभी पडा जाने पन्को बहुत मारा था । इतना मारा था कि वे चारपादमे एक महाने तक विलकुल उठ नहीं सका थी और तभामे य बामार रक्ता है । नया तो इनका तनदुरम्ना र्दुत अच्छा था । निनना काम वा करती था, उनना दृमग फाइ क्या करेगा ? और आज प्म बामाराकी हालतम भा मारा काम खुल रक्ता है, लेकिन उनक प्ममें जग ना भा क्या नहीं । मैने पूरा—

“क्यों मारा था ?”

वह बोली—“बाहर किमाने मचाक उडा लिया था कि उनकी बीबी काली है और बम घरमें सारी गुम्ता उतार ली।” वह बैठी बताती रही कि कैसे घोड़ जाली चाकुर उन पर टूट गयी थी। किम तरह उनकी एक एक नम फोड़े-सी दर्द करता थी और वह मन्थीने भर तक हल्ली तेल लगाती रही थी। “भारते मन्थे आदमी ह लकिन ऐसी मार नहीं मारते”—वह कहती रही। वहाँ किसा प्रमगम उसने यह भी बताया कि यह मन्थ राजपाट इन्हींकी बढीलत है। उनके बाप बहुत धनी पडा थे और यह अकेली लडकी थी। मरने पर मन्थ कुठ इन्हींके नाम लिख गये। यह न होती तो यह रईसी न होती। और वाली उठाते उठाते भी कहती रही—“इतनी नेक और इतनी सीधी औरत आजकलकी दुनियाम मिलना मुशिकल है। अभी अलग हो जाय तो उनके सार ठाठ हवा हो जाय। एक वह हैं और एक ये है जिसने अपना सन कुठ इन्हींके नाम लिखवा लिया है। हम लोग तो इन्हींके भरोसे जी रहे हैं, बाबू। जिम दिनमे नहीं रहेंगी इस घरमें एक भी नौकर नहीं टिकेगा।”

उस दिनकी बात यहाँ समाप्त हो जाता है यद्यपि उस रात म बड़े गहरे मानसिक उथल पुथलमें था और दूसरे दिन जब शामको बढ़ते अँधेरेम पडा था तभी नौकरानाने आफर कहा था—“मलकिन ने कहा है अगर पन् न रह हा तो चले जाय।” मै उनके पाम जाकर खडा हा गया, वे चारपाण पर पडी थी। लगता था जैसे उनका तयायत त्रिलकुन ठीक नहीं है। मुझ देखते हा बोली—  
“कल नाराज हो गये रे।”

“तुम्हारी तबीयत कबसे खराब है—भाभी ?” उन्हाने मेरी तरफसे मुँह फेर लिया, नेमे उहें मेरा यत्न प्रश्न बिल्कुल अन्ध नहा लगा और खामोश रह्यो ।

मेर मुखमे निकल पडा—“नहीं जताओगा ?”

व चुप रह्यो । मेने कहा—

“अच्छी बात है !” और उन्हास उठ कर जाने लगा । मेरे जानेकी आहट पाकर वो कुठ भारी आवाजमें बोली—

“खाना खा लो—मैने तुम्हार लिए ही बनाया है, नहीं तो मुम्हका खाना मेरे लिए रखवा था ।”

मे दन्से तिलमिला उठा । इस वामाराम मेरे लिए खाना । मेरे मुम्हमे निकल पडा—“मैं नहीं खाऊँगा !” और मै तेज़ीसे उपर चला गया । जाकर भस्तिरुमें एक दर्द भरा तूफान लिय हुण चारपाड पर गिर पडा ।

थोडा देर बाद, नौकराना थालालिये हुण आयी और मेरे सामने रखता हुइ बोली—“उन्हाने क्या है, उहें मेरी कमम है—खा लें ।”

मै चुपचाप खाने लगा और नौकरानी बताने लगी कि किस तरह वप इनरु पन्में दो महानेका बच्चा था तभी पडा जाने इनको बहुत मारा था । इतना मारा था कि वे चारपाडमे एक मगने तक बिल्कुल उठ नहीं सका थीं और तभाम ये बीमार रहती है । नया ता इनका तनदुम्ना बहुत अन्ध था । नितना काम वो करता था, उतना तमग कान क्या करेगा ? और आज इम वामाराकी हालतने भा माग काम पुन करती हैं, लकिन उनके दिलमें ज़रा सा भा त्या नहीं । मैने पूरा—

“क्या भारा था ?”

बहू गोली—“बाहर किमाने मनाक उग दिरा वा कि टनकी  
वीरा झाला है और कम घर्में सारा गुम्मा उनार ती।” वर पैदा  
बनाता रही सि कैसे घोड़ वाला चाचुर उन पर टूट गयी वा। क्रिम  
तरह उनकी एक-एक नम फोड़-मी टट करता थी और बहू मटाने  
भर तरु हल्ला तेल लगाती रही था। “मारते मारे आत्मा है लड़िन  
पेमी मार नहीं मारते”-बहू कहता रही। वही किमी प्रमाण उमने  
यह भी बताया कि यह मन राचपा इन्हानी बन्योला है। इनके  
बाप बहुत धना पटा थे और यह अकेला लड़की थी। मने पर  
सब कुछ इन्हों नाम लिख गय। पर न होनी तो पर गेटा न  
होता। और प्राण उठाते-उठाते भी कनी गी—“इतना नेड और  
इतनी साम औरत आजकालकी तुनियामें मिलना मुश्किल है।  
अभा अला हो जाय तो उनर मार टाठ दवा हो जाय। पर वर  
है और एक ये ह किमने अपना मन कुछ इन्हाइ मने लिख  
रिया है। हम लोग तो इन्हाइ भरोस ना के है, मने। कि  
दिनमें नहीं रहगा हम घरमें एक भा नीकर नवा हिरा।”

उम टिनकी जान यही समाप्त हो जान है वर वर वर है  
वड़े गहरे मानसिक उथल-पुथलमें था और मने कि उर इन्हाइ  
बढ़ते अंगरेमें पड़ा वा तभी नौरगनी उर उर वर इन्हाइ  
ने कहा है अगर पढ़ न गद य नी वर उर वर इन्हाइ उर  
जाकर मड़ा हो गया, व चाकट वर वर इन्हाइ  
उनका तमायत लिखकुड टाक ला है। इन्हाइ वर इन्हाइ  
“वर नागज हो गय थ।

मने रहा—“नहीं तो । और फिर तुममे नाराज होना ।”

वन् बोली—“झूठ क्यों बोलते थे ?”

मैने कहा—“तुम मुझसे ठिपाती क्या हो भाभी । इतना दुराज क्या रखता हो ? क्या मन्म लायक नहीं हैं कि तुम अपने मनकी बात मुझमे कह सको ?” यह बोला—“तुम गलत समझते हो । इन आठ दस दिनाम ही तुम भरे चितने अपने हो गये हो उतना शायद कोढ़ नहीं हुआ । मैने अपने जायनकी एक-एक बात तुम्हें बता दा है । कुछ भी नहीं ठिपाया । फिर हम औरतानी जि दगीमें ऐसा होता ही क्या है जो छिपाया जा सके ।”

मैने कहा—“ओफ ! कितना सफेद झूठ बोल गयी तुम । अपना बामाराका बात कल तुमने मुझमे नहीं ठिपाया था ? लकिन क्या समझता हा मुझ पना नहा लगा ? मुझे सब मालूम हो गया ।”

वन् बोला—“ता क्या भला हुआ तुम्हारा ? तरुणाफ ही बढ़ा होगा ।” मैने कहा—“उमम अत्रिक तरुणाफ मुझे तुम्हारे टुगामे हुए था ।” वह बाली—“कितन नादान हो तुम ! कोई औरत अपने पतिकी बुराई कर सकता है ।”

मैने कहा—“अगर बुरा है ता उमे बुरा करनेम क्या हानि है ?” उताने कहा—“नहीं । पति दबना हाता है । दुनियाकी निगाहमें बुरा होने पर भी औरतकी निगाहमें वह बुरा नहीं होगा । आंगनको उमे बुरा करने या समझनेका काम हक नहा है ।”

मै बोला—‘ उनका रतना बरन्मा पर भा तुम एम्मा कह रही हा । ’ उताने शान्त स्वरम कहा—“तो क्या हुआ ? प्यार भा तो

करते ह।" मेने कहा—“अर्थ उनका पक्ष मत लो। तुम्हें नितना प्यार वे करते हैं म जानता हूँ—बकार मुझसे कुछ कहलाओ नहा।”

वह बोला—“तुम लोग नहीं समझ सकते। पति जो कुछ करता है, ठीक करता है। पतिके हाथसे कष्ट पाना भी औरतक लिए स्वर्ग है।”

मैं चुप हो गया। उसी समय जूतोकी चरमर हुई। मेने देखा पटा जी सामने खडे देख रहे थे। भाभा लेगी हुई थी, एक गुलाबी चादर ओढ़े हुए, और मैं उनके पास ही उम्मी चारपाई पर बैठा था। मुझे इस तरह देखकर जैसे वे ठिठक गये और मेरे नमस्तेका बिना उत्तर दिये हुए ही सावे अपने कमरेमें चले गये। वे गाँवसे अभी दस दिन बाद वापस आ रहे थे। मुझे इस प्रकार अपनी पत्नीकी चारपाई पर बैठे देखकर उन्हाने क्या सोचा होगा? सोचकर मैं किसी आशकासे ढाँप सा उठा और हतप्रभ-सा माभी के मुखकी ओर देखने लगा। वह मुझे परेशान देख कुछ मुसक राकर बोली—“तुमसे कुछ नहीं कहेंगे। अगर-कुछ कहना होगा तो मुझमें कहेंगे। इस समय बहुत गुस्ता हो गये हैं। तुम जाओ अपने कमरेमें। मैं समझा दूँगी तो शायद सब ठीक हो जायगा।”

और मैं अपने कमरेमें चला गया। मेरा दिल कोंप रहा था। सोचता था कहीं उनकी मुसीबत न करें। मुझे मालूम नहीं उस रात कैसे क्या हुआ? लेकिन दूसरे दिन सुबह जब मुझे बुलाया गया तब वे अपनी पत्नीके साथ उसी चारपाई पर चुपचाप बैठे थे। मेरे लिए पासमें तुर्सी पड़ी था, मैं उन पर बैठ गया। कुछ दा एक फुटकर बातोंके बाद बात ही बातमें मेने कहा—

“मैं जन्मे आया हूँ, तन्मे मैं देग रहा हूँ कि इनका तमायत टाफ नहीं है, आप वनका टलान क्रीनिए ।”

वह चन्से बोला—“अरे ! पहल पन्ल देखा है व्मलिए गेमा लग रहा है तुम्हे । यन्ों तो दो सालमे यहा रपनार है । थोडी वदुत सराम होती है फिर ठीक हो जाती है ।”

वह बोल—“कायदेसे खायें पिय तो तनीयत काह खराब हो । कहना माननी नहीं है, अट-सट खा लनी है तो भुगतें । मुझ क्या करना है ?”

वतना कहकर वे उठकर गहर चल गये । इधर इनकी तनियत बहुत खराब होता गया और व्धर घरमें तमाम आगारा औरतें चुपक चुपके बुलायी जाने लगा । एक दिन मेने बडी हिम्मत करके भाभासे कहा—

“तुम्हें कुछ मालूम भा है ?”

उहोने पीका आगारमें कहा—“हाँ, सब मालूम है । मैने उहें म्नाचन दे दा है ।”

मैं आश्चयमे उमका मुँह देखने लगा । व फिर बोलीं—“भरे मना करनेमे व मानते थोड हा ना, और फिर मैं तो वामार हा रहना हूँ । क्या करें वचारे ? मैं किमा लायक ही नहीं हूँ ।”

मैं मत्र रह गया । मने चोगसे क्ना—“लेकिन यह बुरा है ।”

व चन्से वाच उठी उमा बुगला आगारमें—“पतिन लिए कुछ भा बुरा न्नी है । फिर आत्मी तो प्मा करते हा है । सनक आत्मा करते ह, उहें सब गोभा देता है ।”

मैने कुछ म्नाच कर क्ना—“पर क्या यह ज्यादाता नहीं है ?”

वे बोलीं—“ज्यान्ती क्या है ? भगवानने उन्हें उठा बनाया है, मालिक बनाया है। वे सब करनेके लिए आज़ाद हैं। हम लोगों की तरह गुलाम बंदे ही नहीं हैं।”

मेरे जामें एक जोरका विद्रोह उठा। जामें आया कि मैं चिल्ला कर कहूँ—“नारीकी यही अथ भक्ति उमे तबाह कर रही है। सब कुछ उमका होने पर भा उमे कुछ नहीं मिलता। सब कुछ दे देने पर भी वह कुछ नहीं पाती, एक दरका-भा प्यार तक नहीं। आज पुष्प निगडता जा रहा है, तिन पर तिन उमाका अथ-भक्तिके कारण उमीक लिए बुरा होता जा रहा है।” पर उनकी आँसूके उम अटिंग निचामके सामने कुछ कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ी। तभी उन्होंने मुझ पुचकार कर कहा—

“तुम उन्हें दोष मत लिया करो। उनकी भी मनवगी समझा करो।” और मैं उस वाक्यके पीछे छिपी हुई पति-पूनाकी भावना पर तिरमिला गया।

उनकी तनायन तिन पर तिन गगन होनी गयी। वह चारपाई से उठा गयी। लेकिन उनकी फोड टीरमे दबा नहीं हुई। जब पर म ज्याण्ड ग होता था, ज्याण्ड दम्न आते थे, पासके वैधवीक यहासे चूगन आ जाता था। उनको कुछ भी हजम नहीं होता था। तिनना थोडा-बहुत खाती थीं सब निरुल जाता था। कम-जोग बढ़ती जाती थी, लेकिन किमीको सोच चिन्ता नहीं थी। बाहर बैठकमें बैसे ही तिन तिन भग ‘फ्लाग’ जमता था, भग छनती था, नाच-रग होता था, दावते उड़ती थीं, ट्टाके लगते थे।

एक तिन मैं तिन पकड गया और तिन किमीकी ‘हाँ’ ‘न’



सुने हुए डाक्टर बुला लाया। डाक्टरने देग्बर कहा—“आप लोग अब तक सोते रहे क्या ? इन्हें अँताका गी० गी० हो गयी है। आतें सड़ गयी ह। अब भी समय है किसी विशपज्ञको फौरन दिग्गद्ये। अँतें काट कर खडकी अँते लगायी जायगी। जल्ती कीनिण, वरना हाथ धो नेटिणगा।”

डाक्टरके जाने पर वे बोले—“अरे ! ये डाक्टर एसे ही उराया करते ह। निमको इश्वर मारना चाहेगा कोई नहीं बचा सक्ता। बकार है चार पाँच हजार रुपया फेंकना मेरी समझसे तो।” और फिर भाभीका ओर मुँ कर बोले—“और फिर यदि तुम्हारी इच्छा हो ही तो कोशिश कर ली जाय।”

उन्होंने दृढ हो कर उत्तर दिया—“निन्कुल बेकार है। जीना होगा तो जा हा नाऊँगी। तुम रुपया बरबात मत करो। मुझे तो लगता है, कुठ भी नहीं है, सन ठाक हो जायगा, तुम घबडाओ मत।”

उसा दिन शामको वे १४००) की मोटर-सायकिल खराद लाये और उस पर घूमने निकल दिये। म उनके पास बैठा रहा। मेरा दिल बहुत घमरा रहा था। वे बोले—“मुस्त क्या हो ?”

फिर अपने ही आप बोलीं—“मैं जानती हूँ तुम क्या सोच रहे हो। मैं अच्छी तर हर बातमें उनका इच्छा समझती हूँ, जानती हूँ वे क्या चाहते हैं, क्या नहीं। इसीलिण मैं गुद पहल से ही एमे काम गन जाना हँ, तो उनका इच्छाक प्रनिहू होते हैं। औरत प्यार चाहता है।” पना नहाँ कैमे भरा भरा जानानम

इतनी बातें उनक मुखसे टूट टूट कर निकलीं और फिर खामोश हो गयी ।

हम दोना बहुत देर तक गुमसुम रहे । सॉझ ही चुकी थी । सूरजको झूमे देख घरके उम दालानमें अधकार उमड आया था । बातावरण सॉय-सॉय फर रहा था । फिसी मरे हुए, हिरनकी पथरायी आँखोकी तरह यह खामोशी भयानक थी । पर हम चुप थे । फिसीके भी मुखसे जैसे आवाज़ निकलनेकी ताकत ही नहीं रह गयी । उस मैले फिस्तरेके, मन्मैले तफियेके आकाशमें, मुझे लगता था, जैसे एक चॉन् डूबता जा रहा है, उसकी रोशनी फीकी पडती जा रही है और अधकार घना होता जा रहा है । मेरे दिल में दर्दकी काली लहरें उमडने लगीं । आखिरकार बही बोलीं—

“सुम्त क्या हो ?”

मै कुठ उत्तर नहीं दे पाया । बढ़ना हुआ अधकार मिवाय इसक कि अपनेमें ही घना हो-हो कर रह जाय, दूर डूबते हुए चॉदसे कभी कुठ कह पाया है । फिर मै हा क्या फहता ?

वो बोलीं—“खाना आज नहीं खाया है, लगता है ।”

मैने कहा—“खा लूँगा ।”

उन्हान कहा—“मुझम तो हिलनेका भी सामरथ नहीं है । नहीं तो बना देता ।” और उनरी आँखोंसे आँसुआकी दो बडी बडा बूँदें बह गयी । फिर बोलीं—उमडे हुए तूफानको शायद रोकती हुई

‘तुम कहा करते थे कि तुम तरकारियों बहुत अच्छी बनाते

हो। आज पराठा तरकारी बनाओ, मैं खाऊँगी।” और एक पीड़ापन लिये हुए मुमररा दी।

मैंने कहा—“लकिन तुम तो कहती थीं कि मैं दूसरेके हाथ का नहीं खाता।”

वह बोला—“लकिन तुम अब दूसरे कहों हो।”

मैंने ज़नकी इच्छानुसार बड़े उत्साहसे खाना बनाया और डाक पास ले गया। थाली मामने रख कर बोला—“तुमने बतने मनमें क्या था, इसलिये टालनेकी हिम्मत तो नहीं पड़ी, लकिन अगर तुम न खाओ तो बहुत अच्छा हो।”

वह बोली—“बेमारका बात मत सोचो, खा पाकर मरने दो, आखिर मरना है ही।”

मैंने कहा—“तब मैं तुम्हें नहीं खाने दूँगा।”

वह बोली—“अच्छा, एक ही कौर खाऊँगी।”

मैंने कहा—“नहीं,” और थाली उठा कर उपर रख आया।

उन्होंने कहा—“यह अच्छा नहीं किया तुमने, मरते हुए आत्माके सामनेसे थाली हटा लो।”

फिर बोली—“बो तो खाना खा चुके हैं न।”

मैंने कहा—“हाँ, अपने पडासा दोस्तके यहाँ खा पीकर मिनेमा दमने गये हैं।”

तभी मरे किसी दोस्तने बाहर आवाज़ दी, मैं चला गया और जब मैं लौट कर आया, तो मैंने देखा, उन्होंने नौकराना द्वारा थाली मँगवा ली है और तक्रियक सहारे पैठा खा रही है। मुझे दम कर मुमरराया और बोली—

“अब तो मेरा फोर्ड एहमान तुम्हारे ऊपर नहीं रहा न।” मेरे गराज पर जैसे गिर्यो चल गयी। उन्होंने म्याङ्ग पाना पाते हुए, एक निश्चित स्वरमें कहा—“अब चाहे भगवान् नरकमें ही टाल, तुमसे ठूँसाटूँस मैं नहा निवाह पायी।”

उस समयमें उनकी तपीयत और खराब होने लगी। हमारे दिन उठने हम लोगका साथ ताग खेल्नेकी इच्छा प्रकट का। यह कुछ निश्चित था, तब भी माट साहज लक्षण अच्छे न देख कर और अन्तिम इच्छा समझ बैठ गये। हम तीना मुञ्जिल्लमे एक राजी खेल पाये निममें बट हार गया। फिर उन्होंने एक माम ग्योच कर पत्ता फेंक दिया और मरी आर देख कर जोरसे परेगान सा बिल्लाया—“तुम कुछ भी क्यों, मैं यह नहीं मानती।” पता नहा इसके क्या अब थे। उन्होंने हम हारसे क्या समझा? लेकिन मैंने इतना ज़ख्ख देखा जैसे उन्हें हम हारमें तरफ़ाफ़ हुड है और उनका मागे खुशा दुःख हो गयी।

यह सुनकरका समय था। फिर दिन भर उनकी तपीयत तेजीमें प्रगडता हा गया। हम लोग सब पास बैठे रहे। चूरन वाले बैद्य दवाकी पुड़िया मुँहमें डालते रहे। लेकिन शाम तक यह चल बसी। मरते समय उन्होंने दो इच्छाएँ प्रकट का। वह लगभग अन्त तक मोन्ती रगी, दम्बती रही, ममझनी रहा, लेकिन वह खुशी जा ताग खेल्नेके पहले तक थी नहीं थी। पहली इच्छा उनका अपने पतिमें था। निमके अनुसार उन्होंने उनका पैर अपने पाम रखवा लिया और उन चरणाकी धुलि अपने माथेमें लगा ला। और दूसरी इच्छानुसार उन्होंने मुझ बुलवाया। मैं तब जडवत बैठा था। पति

को पाससे हट जानेको कहा और उनके हट जाने पर मुझसे धारे से बोली—

“मुझे तुम्हारे ऊपर बहुत यकीन है। मेरे मरनेके बाद एक काम कर देना।”

मैं चुपचाप सड़ा रहा। बोला नहीं। डर था वहाँ भीतरका तूफान बाहर नष्ट पड़े।

वन् बोली—“इनकी जल्दा हा निमी सुन्दर गोरा लड़कीसे शादा करा देना।”

और फिर उन्होंने अपनी बड़ी बटी सुन्दर अँखें मेरी जल-भरी अँगुलियाँ डाल दीं और वे दग्गते दग्गते पथरा गयीं। लेकिन पथराते पथराते भी उन्होंने मुझसे बहुत कुछ कह दिया। काश कि वह ‘कुछ’ भी मेरा फलम लिख सकती, फिर मैं दुनियाको बताता कि वह हत्या थी, एक निर्दोषका हत्या थी, एक लेकिन नही रहूँगा, क्योंकि वह एक गड़ थी ‘उहे’ दोष मत देना। पतिना दोष नहीं होना। लेकिन क्या उस पतिना भी नही, जो उनकी लाग फूँक कर घर आते समय हा राहम नाउम्मे कह रहा था—

“ठाक कहते हो तुम। घर तो उचड गया। जल्दा हा बमाना भा पन्गा। उस लडकामे शादा तय करो जिसे मेलेमें दखा था। नोशिंग करोगे ता उमका माँ मान चायगी। वे लोग बहुत गरान हैं।”

और नाऊ कह रहा था—“अच्छ सरकार, दसना हो जाय जरा।”

“हाँ हाँ, सो तो हो ही जायगी, लेकिन तू रातचीन अभीमे शुरू कर दे।”

और मैं श्मशानसे लौटते समय उस निचन मागमें, उन लोगा की ये बातें सुन रहा था, और दूर प्रतिफल बढ़ते हुए आधी रातके अचकारके बीच, आकाशके उस मोनेम इगता हुआ चाँद देख रहा था। एउ चाँद तो इग ही गया। लेकिन दर उन निम-निमाते हुए घरोंमें, ऐसे नितने ही चाँद इग जाते हागे—और उनकी चाँदनी किमी अँधेरे मोनेम, अघमक्ति और अत्याचारकी परतामें घुट-घुट कर टपन हो जाती होगी।



## सोनेके पूर्व

उस समय आधी रात बीत चुका है। उस कमरेका दीपारा  
 पर झामोला उलझा रहा है। मैं चान्ती हूँ कि मुझे नींद आ  
 जाय, लेकिन इतनी हटनी सी चान्ती भी अलसीसा यहाँ पूरा नहीं  
 होता। मुझे अपने ऊपर गुम्मा आता है, उन हवाएँ अलसाये  
 हुए धाराएँ पर गुम्मा आता है, जा रह रह कर गहर बरसनी हुई  
 बरसातकी रगान नगाना फुहार चुराकर कभा कभा मेरे ऊपर टाल  
 मुच गुन्गुना जते ह। कब वार मुचे ऐसा लगता है कि मुझे नींद  
 लगभग आ गयी है और अब मैं कोड मधुर सपना देखने वाली हूँ।  
 अपने धर हुए हाथ पैर, थकावटके मांठे मांठे ददमे चूर शरीरका  
 पान अब मैं खा चुकी हूँ। कबल मेरी आँखें इस कामल शय्या  
 पर ठाये हुए अधकारमें डुठ खान रना है। निलकुल पास  
 मिट्टाने स्टूल पर एक जार रखा है, उसका पानी कभा लाल,  
 कभा नाला, कभी पाला मा लगता है। बुलता हाथ, आमल,  
 मधोमा, चायक छत्र और रमा तरह चम्मच और कागका गन्ध,  
 दुत बतना हटका आगज भा बाच-बाचमें एक एक करक आ  
 जाता है। और फिर गहा चार कभा छाग, कभा गडा, कभा  
 लाल, कभा नाला, कभा पाला, फिर लाल हा जाता है, और वह लाल  
 पनाथ उपर उठ रना है। धारे धार और नाचे-नाचे चार भा उठ  
 रना है, अउरे-मे घिग हुआ बन् लेनीमे नाच रहा है। उमका रग  
 चन्ता चला गार, हग, नाला पाला चदरना जाना है, फिर अचा

नरु गिर पटता है । फरु पर गिर नरु टूटनेकी ज़ोरकी झनझनाहट  
 आती है और मरे ऊपर दर मा पानी छरुकर कर गिर जाता है ।  
 चारु कर मेरी आँख खुल जाती है, देखता हूँ भीगी हवाका एक  
 झोका खिडकी के दरवाज़ेको भडभडा गया है और मरे ऊपर एक  
 फुटार डाल गया है । मैं चाहूँ तो खिडकी बन्द कर सकती हूँ,  
 मेरा कपटा और मिस्तरा भीग चला है, पर यह फुटार अच्छी भी  
 तो लगता है । फिर उठूँ कैसे ? हाथ हिलाने तरुको जी नहीं  
 चाहता है । लगता है, जैसे जान नहा है, शरीर शिथिल है, निर्जन  
 है । कदे मार मने कोगिश की है खिडकाकर शीग लगे दरवाज़ाको  
 बन्द करनेकी, जो हवाकर टशारे पर खुलने और बन्द होने पर  
 चौपर और तरवाज़ासे टफ़रा कर भूनभूनता पडते है, पर हिल-  
 डुल जो नहीं सकती हूँ । ऐसी हालतम हवाकर कारण अपने-आप  
 दरवाचाकर बन्द हो जाने पर मुझे खुशी होती है और फिर यह  
 सोचता हुई कि अब कोई भूका नहीं आयेगा, मैं आरें बन्द  
 करने लगती हूँ । निम रेस्तराँम मैं आनसे काम करने लगी हूँ,  
 उसके मालिकका चेहरा मेरी आँखाकर आगे बनने लगता है । मुझ  
 यह बुरा लगता है क्योंकि मैं मोना चाहता हूँ, इसलिए कुछ खीझ  
 कर मैं पल्लें रूज ज़ोरसे दनाता जाती हूँ, उन्हें नमश और ज़ोग्मे  
 दनाती जाना हूँ, यहाँ तरु कि पुतलियों दद करने लगती ह और  
 फिर आँखें शिथिल हो जाता है, लकिन उमकी शकल मिटनी नहीं ।  
 गोरा-गोरा चेहरा, पिचके गाल, माथेकर बायी तरफ मूखे-मूखे गिरि  
 हुए बाल, मत्थे पर तान मल्लटे निनम रुभा गुम्मा और रुभी  
 परेगाना, मोटे-मोटे ओठ, जो मालूम पडते है उमके चेहरे पर



अलगसे जोड़े गये हैं। कभी कभी वे दौंतीसे दबाये जाते हैं, लेकिन दौंतीसी पफ़डम एक चौथाड़ ही आ पड़ते हैं। कभी कभी मुमक राते हैं। एमे अमर पर व और भी भद्दे लगते हैं। ओफ। ये भद्दे आठ मेरे सामने क्या आ रहे हैं ? हे भगवान्, इहे हटा लो मेरे सामनेमे। पर ये और और स्पष्ट होते जा रहे हैं। उनका आकार भी बड़ा होता जा रहा है। अब ये बहुत बड़ हा गये हैं। मेरा ऑसो दर्द करने लगा है, लेकिन एमा लगता है जैसे ये पत्थर के हाफ़र फलफ़ पर चम गये हैं। इतना बड़ा आकार देखकर मुझे हँसी आती है, नहीं, भय लगता है। ओफ। यह चायका सफेद प्याला उसक ओठाके सामने कितना छोटा लगता है। जैसे दूध पात समय एक हटकी-मी सफ़दी उसके ओठाके एक कोनेम रह गयी हो। पत्थरको दो बड़ पाटसे उसक आठ अत्र खुल रह है। मैं नहीं चाहता ये खुल, कोई उहे हटाओ, मुझे बचाओ। वे खुल गये, मुझे डर लग रहा है, आवाज़ भी निफल रही है—

‘तुम्हारा नाम !’ नैमी कफ़श, नीरम, अधिकारक गवसे भरा आवाज़ ! मैं इतना भयानक आवाज़का उत्तर नहीं दूँगी, नहीं दूँगी। पर लगता है जैसे मैं कॉप रहा हूँ, उत्तर दे रही हूँ।

“मिम मोना फान्तर”, मेरी आवाज़ बहुत कॉपी है। ‘मिम ! ऐंला रन्धिन। बहुत अच्छा ! बहुत ख़ुब !’ ओफ। यह आवाज़ ! यह भद्दा मुमकान ! मैं नहीं बरतान कर सकती। उमके इन बड़े-बड़ ओठाका मुमकानम उमकी टाग-छोग धूतनासे भरी आगे भा अत्र फैल गया है। व ऑगे कुठ और चमका है, वे ओठ कुठ मिट्टा क और खुल है।

“नत्रैरूपे माह्वार !” आवाज और दृश्य, नीरम, मरानक पर पना नहीं क्यों शब्द मोटे लग रहे हैं। जी में आता है एक बार वह यह वाक्य फिर टुंग दे। पर—

“ज्ञान ममव लो ! और मैं यह सब नहीं समझना चाहती। ज्ञान, रेस्नगोंमें, टैडवर प्रचाये। किसी तरह यह सब मेरी आँवोंमें नष्ट जाता। लगना है मैं पूरी ताकतमें पत्रके उन ओठाको हटा रही हूँ, पर वे इतने भारी ह कि हटने नहीं। नहीं—वे विभक्त गये हैं, क्योंकि मेरे हाथ टूट करने ला है और आँवोंके सामने यह रेस्नगना नीली-नीला दीवार आ गयी है। मेरी आँवें देखती हैं और समझती हैं कि खुली हुई है। मैं बार बार जली-जली अपनी आँवें खोलता और बन्द करती हूँ, पर क्या कब मेरी पलकें खुल भागी लगती हैं। हाँ। अब यह नीला दीवार खो गयी है और मेरी आँवोंके सामने ऊपरका आकाश भी सामने है। घना अंधेरा, आँवें खुला-की-खुली हैं। एक हल्की-सी कोणिका की मने पलक बन्द करने की, पर लगना है जैसे वे हिलती ही नहीं, और मेरी आँवें खुला हैं और उनके सामने घूम रहा है घना अंधेरा, जिसकी गति हर क्षण तेज होना जा रही है।

ज्ञानके पाम एक मूँ-मूँकी आवाज आ रही है। मैंने समझने-का कोणिका नहीं। यह आँवकी तेज हवा है जो मुनाहट दे रहा है। पर यह आवाज और तेज होनी जा रही है। जी में आता है कि ज्ञान बन्द कर लूँ, पर हाथ खिजनेकी तभीयत नहीं करनी। वे खिलने ही नहा। अंधेरेका नृत्य आँवोंके सामने अब घामा होता जा रहा है। लकिन आवाज तेज होनी जा रही है और हवाका

एक जोरका झंझा आया। ग्विडकीके दरवाने भडमे खुल गये। पानाभा बहुत बड़ी बड़ी वृद्धे निम्तर पर आ गिरीं और गिरती रहीं। नवा तेज़ामे आ रही है, अपने असम्य पक्वा पर पानाभी कभी कभी छोटी छोटी और कभी कभी बड़ा वृद्धे लादे हुए। पानीका बौंठार जोरसे आ रही है और लगातार मेरे ऊपर पड़ रही है। मैं भाग रही हूँ, निम्तर भीग रहा है, पर यह त्रिवार बनने भी नहीं पाता कि एक ब्रह्मावृत्त घने कुहामे छिप जाता है और मैं भूल सी जाती हूँ। इस समय केवल मुझ बड़ा तेज आवाज़ सुनाई पड़ रही है। गायद ओंधी भी आ गयी है। नम तेज़ आवाज़म एक मोग आवाज़ भी सुना देने लगा।

“तुम्हारा काम है मुसकरा कर लोकारे पास जाना और पूछना, आप क्या चाहते हैं?” यह वही आवाज़ है जिसके सुननेसे मैं मरना बेहतर समझता हूँ, पर लगना है जैसे मैं कह रहा हूँ ‘अच्छ’।

आवाज तेज़ होती जा रही है और बार बार मुझ सुनाई देता है, “तुम्हारा काम है मुसकराना, तुम्हारा काम है मुसकराना मुसकाराना-मुसकाराना।” यह आवाज़ तेज़ और तेज़ तथा पतंग हाना जा रहा है, उस ओंधाकर गोरम जो मैं सुन रही हूँ। मेरे हाथ पैर पर अब लगना है नम सोई हथौड़े मार रहा है। एक बार मरा भारा पड़ने अपने लगना है। कानाम गूँतता हुद ओंधाका आवाज अब धारे धारे नम होने लगा है। पर वह पतंगी आवाज तब हाने लगा है, फिर उहा नाग भा नयार। तेज प्रकाश, रंग त्रिगो रूपके नम आत्मा कटकह, अदृशम वातवात, गाना, पुमकुमाना, विचित्र विचित्र स्वर, चम्पच-कॉंगरा मरपट,

चाप, नाफी, टोम्, आमेट्ट, घूमती टुटे तन्तगियाँ, राग-धार  
 मैनेरनी घरी, यह लाओ, यह लाओ, वहाँ जाओ, उनमे पूछो,  
 पैमोकी मन्वन, मैनेरना मेन पर मिगरेटना पुआँ, लोगोकी मेरी  
 ओर घन्ती टुटे आँव। मर तेनामे मेरे टिमागेके अन्तर घम-मी  
 र्नी है। पूरा रेम्नगें घम र्ना है, नमरा घम र्ना है, मैं खुले घम  
 र्नी हूँ, चाग्पाट घम र्ही है। ओफ ! यह मर क्या हो रहा है ?  
 जामे आता है मैं चिल्लाऊँ, र्ने जोग्मेचिल्लाऊँ, परमेग आगान  
 नहीं निरन्नी। मुचे चक्कर आ र्ना है। लगना है मैं आममान  
 से जमीन पर गिर र्नी हूँ। मन-मन् सूँ-सूँनी आवाज़। गीच-बीच  
 म र्ने मोटे ओठ और फिर भागी म्गर—“धुम धुमकगना नहीं  
 जानती, नन् माम् कर आना, अगर नाम करना हो।” मैं निर-  
 मिला ट्टी हू। नाच, कुत्ता ! धुमकगना माम्कर आओ। मैं नहा  
 आऊँगी। नहा नाम करूँगी। पर यह आवाज़ गूँज र्नी है आगी  
 की तरह, तूफानका तरह मेरे जानामे—

ओफ ! मैं मोना चान्ती हूँ। किसी तरह नाट आ जानी।  
 पर नहीं आयेगा शायद ! नहीं, आयेगी, नन् आयेगी। आफ !

इस समय लगने लगा है जैसे माग तूफान खामोश हो गया  
 है। बुँपके गहरे कटरे बाटल, मम्बिज्मे घुन्मे रहे है। अब भी  
 मन चीज़ घूम मा रहा है लेकिन उनका आकार बुँपला और गति  
 गिन्डिन्मी मोना जा र्ना है। मैं ता चान्ती हूँ कि उनका आकार  
 निरकुल मि जाय—और मन गान्न हो जाय। तन्द्राकी लहर पर  
 दनीन् म्गरमें दोटे म्पनाका गीत एक हल्की कम्पन-मी लहर  
 कर र्ननीना दान्माकी तरह मुखपर फैला द और मैं मुक्ति पा

निम्ननी और ये मुखावृत्तियाँ छोटा-बड़ी अनेक आकारासी होकर मेरी आँखाके समान ठाय ठाय अधकारमें भँडराती हुई मुझे टरा रहा है। उनकी सन्ध्या बढ़ती ही जा रहा है। प्रत्येक आकार जल्दी जल्दी परिवर्तित होकर और भयानक होता जा रहा है। उम अधकारकी पृष्ठ भूमिपर निनमें ये चेहरो नाच रहे हैं, कल्प तमाम वासनासे भरी हुई अनेकानेक आकारासी आँखें स्पष्टतया चमकना शुरू मेरी ओर घूर रहा है। लगता है उनका वामनात्मक चमक मेरे अङ्ग-अङ्गपर छुरियाँ चला रहा है। मैं तिरमिला उठता हूँ, मानो ये ग्वा जायगा मुझ। मैं नॉप रहा हूँ और व चमक रहा है और भयानक होकर। कानाम एक आवाज़ घूम रहा है, तडप रही है गरज रही है, 'तुम्हारा काम है मुसकराना' 'मुसकराना'। भयमे मैं मूक रहा हूँ। मैं चाहता हूँ किसी तरहमे य हट जायँ या मर प्राण निम्न जायँ। य घूरती हुई भयानक आँखें इस अधकारमें अङ्गारा-सी जल रही है। मुझपर बरस रहा है। मैं जल रही हूँ, तडप रहा हूँ, लेकिन यह आवाज़ आता हा जा रहा है 'तुम्हारा काम है मुसकराना मुसकराना।'

गायक आचकी रात मैं सो नहीं सकूँगा, मर सकूँगा या नहीं यह भा नहीं कर सकता। तना ता लगता है जैसे मैं अग्रमरी हो गया हूँ। य आँखें उम अधकारमें नाचता हा जा रहा है। इनका भयानकता बढ़ता हा जा रहा है। मन्धा बिन्दुआक टक बन उन कर य मुन मार रहा है। मैं जा रहा हूँ, दख रहा हूँ ज़ररस्ता, परग, अन्ने चमहाय, और यह जायान प्रतिभण गूँचना जा रहा है—“तुम्हाग काम है मुसकराना मुसकराना।”

## कमला मर गयी

“सुना है कमला मर गयी।” मैंने अपने उम लम्बे चौड़े खतम निममें उसने तमाम टधर-उपरकी बात लिखा है, एक कोने में यह भी लिख दिया है। जैसे इसक लिखने की उमने कोई जरूरत न समझी हो और पता नहीं कैसे यह लाइन उमकी उम से निकल पड़ी हो। आकाश अनन्त नात्राके बीच जैसे किसी तारेके ट्ठने पर कोई कह पड “दन्वा नहीं तुमने, अभी एक तारा ट्टा था” और फिर अपने कामम लग जाय। एक बात थी जो सूचनाक रूपमें निरल पडा। उमक पाठ कोई रिचार, कोई गहरा अनुभूति, कोई सहानुभूति नहीं, केवल एक सूचना—सूचनामात्र।

मैंने यह पक्ति पढ़ा। कई बार पढ़ी। कड टगमे पढ़ा, विभिन्न स्वगघात दे देकर पढ़ी। मम्भय है काद दद, कोई हल्की सहानुभूति इसके पाठ मिल ही जाय पर लगना है सत्र निरर्थक है। उस पक्तिने पड़े रहनेम या निकाल देनेमें खनका कहीं कुछ बनना-मिगडता नहीं, वह अपनेम पूण ह और मरी जिन्दगी भी है, ठीक इस परकी तरह। कमलाका नाम कर्णों किम कोनेमें था बहुत आँसों गढाकर टेग्वने पर, मस्तिष्क पर जोर टालने पर ही पता खाता है, उमक ‘रहने’ ने इम लम्बे चौड़े जायन पर नहीं कोई प्रभाव नहीं टाला और आन उमके ‘न रहने’ ने कर्णों कुछ एमा नहीं किया कि उसका कुछ कमी खण्डे। लकिन कमला ‘मर गयी’। यद्यपि यह ‘मर जाना’ शब्द मैं दिन भरम सैफडा बार सुनता हूँ

पर—वेनार प्रभावशील पर—फलारु साथ उस 'मर जान'का सम्बन्ध कुछ अतीव लगता है। लगता है मर गया तो कोई बात नहीं, लेकिन अगर न मरती तो अच्छा था। यानी औराम और कमलामें मेरे लिए भेद है। जब जिन्दा थी, हम दुनियाँम रहकर भी वह मेरे लिए नहीं था, लेकिन आज मर जाने पर जैसे वह मेरे लिए कुछ हो गयी हो। जब तक वह जिन्दा था मैंने कभी उसके लिए कुछ नहीं सोचा लेकिन आज जब वह मर गयी है, मैं उसके लिए कुछ सोच रहा हूँ। उसकी जिन्दगाने तो नहीं, लगता है उसकी मौतने कहा थोड़ा बहुत उसको मुझसे बाँध दिया है।

एक घना कोहरा है मेरा आँखाके आगे, निमम मे उममे सम्बन्धित स्मृतियाँ टोल रहा हूँ। एक घटना पकडम आ रही है। मुझे आश्चर्य है कि यह घटना आज तक मुझ याद क्या है? आचमे लगभग बारह बप पृवनी बात है, जब मे नौ या दस बपका रहा हूँगा, कमला का परिवार मेरा पडोसी था। मेरे घरसे लगभग दो फर्लामपर उमका घर था। उमकी माँ और मेरी माँ म बहुत पत्नी था और अस्मर वे लोग एक-दूसरेने यहाँ आया नाया करती थीं। यही कारण हमारे उमके सम्पर्कम आनेका था। या बच्चाका सम्पर्क परिवारका अपक्ष अधिक शीघ्र और गहरा हो जाता है फिर वह ता मेरा समयका भा थी। सेल-कूदम हम लागाको बहुधा एक दूसरेका जम्हरत पडता थी। मैं स्वभावमे ही गम्भीर था और चिन्ना हा मैं गम्भार था उतना ही वह चञ्चल थी। शामका समय था। मेरा मफान बहुत छाग गपरेलका था और वह भी एक गलामें। इमीलिए प्रकाश जल्दी निदा ले लेना था। मैं बैठा

पढ़ रहा था। मग गिन्स र्नायलमे मा अपिक काला था अन  
 अँपेरा छते ही म लालटेनका प्रनाक्षा करने लगना था क्योंकि  
 मुझ उम दग्गदर टर लगने लगना था। उम अँपेरेमें उमक काल-  
 काल चेंद्रेम उमक मफ्ट नॉन रह-रहकर चमक उठत थे, जन  
 वर मुझे हिमात्र लगाते समय नहीं गुणाभागमें गळती रग्नपर  
 टॉपता था उम समय मुझम ज़रूर गळता होना था और  
 माधाम्ण गलतिया पर जन वह मेरे ज्ञान परटकर चिल्लाता था  
 तर मैं ऑँग रन्दर वीग उठता था, दग्म कम लकिन मों द्वारा  
 जुताया हुई ग रमाती रहाना था करक अधिक। एमे अरमगपर  
 मैं निमात्र भूँकर भगवानकी था करने लगना था। उम दिन  
 एमा ही अरमर था नर मैं भगवानकी था कर रहा था। नर  
 मेरे ज्ञान पठ रहा था और रमरमें अँपेरा छ गया था। तभी  
 रनगर पिता आय थे। उटाने कन—'मास्टर साहब ! नग उमे  
 दा मितरका उडा तो दे टाविए'। मैं प्रमन हो उठा, यह माचकर  
 कि भगवानन मरा पुनार मुन ला। लेकिन मैं ज्योटा कमरके वाटर  
 प्रकाशम आया, मैं उनका चेंग दम्बर नाप उठा कनाकि वर  
 राधमे तमतमा रण था। मैं प्रतुत टर गया और म्वा होकर  
 गायर मज्जाका प्रता राम अपगवा-मा उनका और दम्बने लगा।  
 मुव ररने दम्बर वे पडे करे म्बरमें वोल—'आटये आटये, म्क  
 क्या गय ?' और व तेनामे चर पडे एक और गलीमें चिममें  
 उनका घर था। कुठ तो टग्मे और टुठ टोग होकर नाण मैं  
 पिठड़ जाता था लेकिन उनकी निगाह घूमन ही मैं रौंकर उनका  
 रणध परड रना था। गस्ते मर न मुझमे कुठ नहा था, लेकिन



वन् तो फलागन्ना रास्ता मेरे लिए कितना फट्टदायी रहा होगा, उसका अनुमान इसीसे किया जा सकता है कि वह आन तक मुझ याद है। उस गलाम निसम अधेरा उमड रहा था और मन्डर मूँ-मूँ कर रहे थे, मैं कितना बेचैना लिये भाग रहा था, यह मैं आज भी नहीं भूलता। सोचता था कहीं कमलाने शिकायत तो नहीं कर दा है। केसी शिकायत करेगी वन् ? मैंने उसे मारा तो है नहीं। फिर दधर मुझमें उससे भगडा भी तो नहा हुआ। कभा सोचता था शायद उसे नहीं चोट लग गयी हो और उमने खुद बचनेके लिए मेरा नाम लगा दिया हो। कभा सोचना हो सकता है उममें कुछ नुकसान हो गया हो, कोई चीज़ टूट गई हो, कोई चीज़ खो गया हो या कोई चीज़ उसने चुराकर खा ली हो और खुद सजासे बचनेके लिए उसने मेरा नाम लगा दिया हो। वम इतना हा मरी उस समयकी मानसिक परिधि थी। इसने आगे मैं नहीं सोच सकता था। परेगान और टरा हुआ, जब मैं मकान में पहुँचा तो मैंने देखा, मकान में बड़े अँगन में चारपाइपर उसकी माँ बैठी पानपान बन्द कर रही है। एक पतली छडा पास में रखी है। कमलाके हाथ बँधे हैं और वह जोर जोरसे सिसकियाँ भर रहा है जैसे उसने बहुत मार खायी हो। उस समय उसे देखकर मुझे तरस नन्ना आया बटिके में और डर गया। उसके पिताने कन्ना—

“लो इससे पृउ लो।”

मौने बट इतमानानमें कहा, “तुम्हीं न पृउ लो।”

“मैं क्यों पृउँ ? तुम्हीं अपना मित्रियाका बहुत तरफदारा करता हो। तुम्हा पृउो न।” और इतना कहकर वे तेजासे धूमने लगे।

घोड़ी तरह लिपि बनाम ठा गया। सब चुप थे। काल कमला  
 सिमकिया मग रही था। कोनका अमरुतरा पट, ऑलिनरा नीचा  
 नाचा गमारों, ऊँपेरेमे मग हुआ बगमला, पिचउम उँगा हुआ  
 तोना मन मेरी तरह मन्म-महम नगर जा रह वे। मैंने नट गार  
 उमकी आर आन उटायी। लकिन यह ऑमैं नीची निय गेली ही  
 जा रहा थी। उम खामागीमे मग टग जना जा रहा था, मरी  
 टागें सँप रहा थी। आम्बिरदार उमका माँ वाला यह प्याग्म—

“बेग, तू कन् बहा आया था। मच-मच पोल्ना।” पना  
 नली क्या मेरे मुँमे आया नया निकला। य फिर गला—

“जब हम और लग तेरे घर गय थ, तब तुम और कमला  
 साँदर गारुनर चुपचाप मरानमे आय थ। बूठ मन नायना।  
 महारनने मन दम्ब लिया है। वर जना रहा था।”

मैंने कहा, “जा हों।”

उतके बाप बोले—“तुममे निमने कन् था आनेके लिपि ?”  
 उमका आयाच बहुत रुडी थी। घरगारुनर टूने हा मैंन जयाय  
 लिया “कमलान”। क्या ? यह म आज तक नहीं समझ पाया।  
 गायन मर लिम टग रहा हा कि कहीं मेरे उपर न नाई आकन  
 आ जाय। उमक पिना मग उतर मुनकरु जामे चिल्लाय—

“देख लिया, अपनी लन्काकी कमलान” और उमकी ओर  
 धूर-धूरन तेनाम धूमने लगे।

माँ बोली, “क्या बुला लाया था।”

मैंने कहा, “या ना सेल्ने।”

उन्होंने फिर पूछा, “क्या सेल्ने ?”

मने फौरन जमान लिया, “घराला ।” क्याकि य तोना पातें हा सता था । दाजाला ममाप था । हम लोग घराला बनाते थे । मै हमेशा कागज, चमकाली पत्री और दपता आटिका घराला बनाता था । मेरे पिताकी तकानपर अमर शीगरी पैकिगम चाडर बस आते थे, जिहे वे पक्के उपर एक रखर को जटर आलमारा सी बना दते थे । सामने झालर, तपता दर, नाल लाल कागना की फूल पत्तिया, मुनहरा रुपहली पत्तियाक सिंहासन आदि और तम प्रकार मेरा घरादा सजता था । माता पिता भा थोडा बहुत हाथ बँटा दते थे । तीजाला खत्म हानेक बाद खिलौने निकाल लिय जात थे और हम इनमें कितानें रखते थे । हमलाने भा घरादा बनाया था लकिन मिट्टाका । दो कोठेका घरोदा था उमका जा दालानम एक कोनेमें बना था । लम्ब-लम्ब इटे रम्बर उमने दाजार बना ला था, उम पर मिट्टा चढ़ा चूनाकारा भी हो गयी थी । बाच बाचम गेरू घोलर उमन फूल पत्तिया बनाया थी । चाँद सरन तारे आदि घरादक उपर दावार रूपा आनाशमें बने थे । उम दिन भर घर पता नहीं क्या था । तमाम औरतें आया थीं । कमला, उमका बन्नी बहन और मों भा आयी था । सब लोग उन अपने अपने कामम लगे थे, म कमलाको अपना घराला दिखा रना था और समझा रना था, कम उसम पातलका घरा लगेगी, वर जब बनगा तब भगवान्क खानेका समय हागा । भातर कहीं पाया जल्गा और कब ज्याता रात हो जाने पर भगवान् सोयेंगे । कौन लम्मा ना सोयेंगा, कहा गणेश ना सोयेंगे । कौन सा लकिया, चातर लम्मा जा ना है और कौन सा गणेशना का, आदि-आदि ।

मेरे धर्मियों दब-दब उनका मन अपना धर्म भी निवृत्त करने का उद्देश्य था ही थी। उनका धर्मियों का जन्म मित्र और गान्धारी का पति था तब मैंने देखा था। उनका नाम मैं उनका पता नहीं गया था। स्कूल का धर्म नाम करना पड़ता था। नौकर था नया। गला पार करके हा जाचार था जन्म मन्त्र नाम नला धर्मिया, नमक, दूधिया नेत्र, तर्काग आदि का काम पन्ता था, लन जाना पन्ता था। तुम्हारे परिचित थीं, न जाना था। नामका भाष्य और गाली मन्त्र धर्मियों में जुन थे। ऊपरमे माना पिता नती निरारानी रखने थे। धर्मों बाहर निकलने नला देत थे। उनका मन्त्र या दूध-दूध लक्ष्मी माथ गेल्कर मैं खगर हो जाऊंगा, गाली साम्र चाऊंगा इत्यादि। नैर, मैं कमलाका धर्मिया नहीं दब मन्त्र था। उनमें नला, “बला मरा धर्मिया दब आया। तुमम तो अच्छा नहीं है लेकिन मर गणग जा तुम्हारेमे खुन अच्छ है।” मैंने नला, ‘बन’।

और हम लोग जिना तर्क मॉकल खोल धर्म, मुनमान अन्त धर्मों धुस गये थे। धर्मोंक मामनेही चाग्नीधारीमें एक राग बिठा था जिम पर उनमें अपनी माँका छोड फली धौती दान नी था, उन पर दब लोग पैठ प्र और मैं उनका गणग जाको देब देबकर हँस ग्या था। कह ग्या था, “गणग है या धारानन्, ताका निरग है उनका”। और उनका मित्रका धर्मो बचा मैंने दूध मन्त्राक मन्त्र पद जो मुये मात यपदा उनमें ग ग्या जिम तद थ। माता पिता अक्षयमाचा रे, वैदिक मन्त्रा पृग-पृग ग्या था वा और म एक दूध मन्त्रो तर्क नके निरन्मे अत्र धर्मों पाना

रस प्रजा करता था । और उमर दाट तराना खुला दग्य महरिन काम करने आया थी और हम लोग उठकर चल गये थे । कुन् इतना ही बात था । लेकिन उनके पिता मरा “घरौदा,” उत्तर सुनकर जोरसे चिल्लाये, “वह सन म जानता हूँ ।” और फिर अपना पत्नीमे बोले—

“वह तो मे पहले ही जानता था । यह सन उसनी हा शरारत है, अभी दम वपम हा उसके ये हाल है । बदमाश, चुडेल कहा का । गग तोड दो उसनी जो यह कलमे घरसे बाहर निकले ।’ उनका मों कुठ नया बोला, कवल मुझमे इतना कहा, “जाओ” । मै मुक्ति पाये पड़ीका तरह भागा । एक लम्बा दालान पडता था दरवाने तक पहुँचनेमें । जन म दरवाने तक पहुँचा तो कमलाके चाखकर रानेका आज्ञा सुनाई दी । मै रुक गया । मैने उसरु गाल पर पडा हुज जोरनी चपनकी आवाज सुनी और उसके बाद उसरु पिताका जोरमे गरज, “म पूँछता हूँ आखिर कोनेम छिपा घरौदम बैठी उमके साथ क्या कर रही था’ । इतना सुनकर मै चला गया । म उस समय यह न समय सना कि आखिर हमने क्या गुनाह किया था, उनका क्या मतलब था । पर आज बात ममभम आता है और उनका बेवहूफा पर तरस भी आता है । उमर बाद लगभग नस लिन बाद मरा कमलाकी मुलाकात हुई, वर वदुत गम्भीर थी । उमनी चचलता पना नहीं कहीं उड गयी था । वर मोंक पाम अपना बटा वननर साथ कुठ लने आयी था । मरे रमरेम भा उर आया । मै नया नया कापिया पर कागज चढ़ा रना था । मरे पास वर खडा रहा चुपचाप ग्वामाश । मै भी चुप

चाप था। यद्यपि उसे ठमकर लिए उल्टा रहा था। उनसे पूछा—

“तुम्हें तो नहा नारा मारू नाने।”

मैंने कहा, “नहीं।”

कुछ दूर रुककर मैंने फिर पूछा—

“तुझ माग क्या था, कमला ?”

वह सोली—“पना नहीं क्यों ? कहते थे लडकियों का माप अरुने में नहा खेल्ना चाहिए”। फिर उट चला गयी। मैंने उस दिन अपनी मां से पूछा, उनसे भी पूछा—“लडके लडकियों का माथ नहीं खेल्ते।” और तबसे लडकियों के साथ खेल्ते समय मैं मोचना यह बुग है और अकसर अपने साथ खेल्ने वाला लडकियों से मैं कह देता, “मैं लडका हूँ तुम्हारे माथ नहीं खेल्ंगा।”

उसके बाद फिर कमलामे मुलासात नहीं हुई। शायद वे लोग मरान छोड़कर किसी दूसरी तरकीबमें चले गये थे। बचपन के दिनों में साथी बनते और खूने देर नहीं लगती। न जाने किनसे साथी बनते हैं न जाने किनसे छू जाते हैं, मरियममें उमका राई खवा-नोम्बा हम नहीं रख पाते। फिर और नये-नये साथी बने, लेकिन कोई प्यारा साथी नहीं बना जो म्मृति रूपमें भा मेरे मस्तिष्क में निर्या रहता। उसका कारण मेरी गम्भीर प्रकृति थी। खेल्-कृष्णमें मुझ विराप शौक नहीं था, फिर ऐसे लडकोंके और कम साथी होने भा हैं जो खेल्-कृष्णमें भाग न लेते हो। चार-पाँच साल तक फिर कमलाका कोई पना न रहा। उसके बाद जब मैं नैनी क्लामम था, कोई बकील ये उनका यहाँ एक शाली पठा। मुझे भी माँ के

साथ जाना पडा। माँने बताया, कमला और उसकी माँ भी आयी है। लम्बका शाप थी। बारात का बाहर गयी था। घर पर रात रात भर औरतें गाती बजाती था। मैं बाहर लडकाम चैठना था।

जिसा कामसे मैं माँके पास एक क्षणको भातर गया। मैंने देखा, तमाम औरतें बैठा ह और उनके बीचमें कमला नाच रहा है। मुझ आन भा उसका व रूप नहीं मूलना। गौरवर्ण, अत्यन्त सुन्दर, हँसमुख मूरत और गज्जनाका नृगार। उसे दम्बर में फौरन विमरु गया। एक लम्बका जत्र नाच रही हो तत्र वहाँ खड होकर देखना मेर सम्कारके प्रिद्ध था। मे कमरेके बाहर निकल आया। यद्यपि मेरा जा कमलाका नृत्य दम्बरको करता था। इसलिये कुछ देर त्रवाजाकी दरजाको देखता रहा। उस समयकी दृष्टि आलोचना का नहीं प्रशंसाका था। लम्बिन मचत्रराने मुझ वह नाच न देखने लिया। यह सोच कर कि लोग देखेंगे तो क्या रहेंगे ? और फिर इसतरह लुफ छिप कर लडकीका नाच दग्गते चुप। मैं चला आया। अपनेका कितना दयाया था मने, यह आन मुझे महसूस हो रहा है। दूसर दिन माँने कहा—

“कमला तुझे पृठ रहा था।”

मैं खामाश रहा। उसका जमान हा क्या हा सकता है। वे फिर बोली, “सुना है तूने, कमला गावनी बहुत अच्छा है, पता नहीं उम देनातम रह कर उसने यह सब कामे सीखा है।” कुछ रह कर बाली—

“गाती भी बहुत अच्छा है। मगर बड़ी बेहया हो गयी है। गरम तो उममें है हा नहीं। मने ता उसकी माँसे कह लिया

नाचना-गाना बुरा नहीं पर ज्यादा मत उरमाओ नहा तो रिगड जायगी ।”

उसके बाद फिर पाँच साल तक कमला नहा मिली । दून् पाँच वर्षाम मरी जिन्लगा रिक्कुल ही बदल गयी । मे क्यासे क्या हो गया, उसका अनुमान भा लगाना फटिन है । जिन्लगाके नय-नये परदे खुल, नयी नया चीजें आयीं, उनका आरूपण इतना प्रबल था कि मेरे हृदयमें कमलाका रंग मग अन्तिय भा समाप्त हो गया । एक घटना बाद आ रही है । मैं उम शहरम गया हुआ था जहाँ कमलाके पिता बदल कर आ गय थे । उनके विभागमें हर दूसरे-तासर वर्ष बदला हुआ करता था । मैं अपने चाचाके यहाँ टहरा था । एक दिन सोचके समय उन्होंने कहा—“आआ चलो घूम आय ?”

मैंने कहा, “कहा जायेंगे ?”

वे बोले, “प्रचक्रिगोरक यहाँ ।”

“कौन प्रचक्रिगोर ?” मैं कुछ सोचता हुआ बोला ।

“तरे घरक पड़ोसम वे बहुत दिन रह हैं, तू नहीं जानता ?”

उन्हान आश्चर्यम कहा । मुझे बाद आ गया प्रचक्रिगोर कमलाके पिताका नाम है ।

मैंने कहा, “कितनी दूर है उनका घर ?”

उन्होंने कहा “दो मील ।”

मैंने कहा था “आप ही आइय । दा मील जानेका मेरी हिम्मत नहीं । तू फर्माग हाना तो सोचता ।”



आज मैं सोचता हूँ कमलाके लिए कुछ दूर चलने तकनी तन्नाफ मैं नहीं उठा सकता था। तना भी म्नेह उसने लिए मेरे तिलम नहा था जब कि बेकार मैं न जाने कितना उधर उधर घूमा करता था। चाचा चल गये और मैं पडा पडा ग्रामोफोन पर पिट्टे हुए रेकॉड बनाता रहा। जैसे कमलाकी मुलाकातमे उन्हें बनाना ज्यादा कीमती हो।

दो महीने बाद मुझ फिर किहीं छुट्टियाम चाचाके पास जाना पडा। किसी बातके अवसर पर वह कहने लगे।

“उस बार तेरा जिन्न मैंने ब्रजशोरक यहाँ किया था। मैंने बताया राजन आया है पर कुछ थका हुआ था इसलिये नहीं आया। वे लोग तो कुछ नहीं बोले। लेकिन उनकी लडकी कमला है न, वह जैसे तेरे न जानेसे कुछ चिढ़ी था, वह रही थी— ‘हो साहब बड आदमी है। पर न घिम जाते इतनी दूर तक आते हुए। अगर वह चल रहे तो उनको आप अवश्य भेज लानियगा नहीं तो जब फिर आये तब कहियगा कमलाने बुलाया है, अगर इस पर भा न आय तो मुझ इत्तना काजियेगा मैं खुद आऊँगा। यह क्या टसानियत है कि त्नार बार वह यहा आ चुक लेकिन यहाँ एक बार भी नहीं आये। जैसे यह उनका घर ही न हो। हम लोगसे उन्हें फोट मत्तरन हा न हो।” चाचा तना कहकर ग्रामोफोन हो गये, कुछ और काम करने लग गये और मैं सोच रहा था कि कितना आश्चर्यचकित है इस सन्देशमें। चाचा चाचामे कह रहे थे, “उरी मुँफ्त लडकी है, ऐसा बातूनी लडका तो मैंने कभी दम्बी नहीं, काफी टूटेगाँव भी है।”

चाची बोली, “जो भी हो। मैंने तो उसकी बहुत ज़रनामी सुनी है। तमाम कारनाके लटके उसका पीछे पड रहे हैं। उसकी माँ ज़र रहा थी बड़ा आफत है उस लड़के को मारे। ज़रा शाप कर देती तो तुम्हारा मिलता पर इनका बाप घर बैठे लड़का पाना चाहते हैं।”

चाचा बोले, “यहाँ मिस्टर प्रचक्रियारका गलती है। क्या उसे इधर-उधर जानफरेंस बगैरहमें नाचने-गाने जाने दते हैं? जमाना नाजुक है, लड़कियाँ तनिक भी आनापना नहीं करनी चाहिए।”

चाचा बोली “वे निचारे ता नहीं चाहत पर उमर आगे किमीजा चलनी नहीं।”

“लड़का आगे माँ-बापकी न चल।” चाचा कट कर हँसने लगे। चाचा बोली, “रात तो कुछ एसा ही है। वर जहम जग्ने लगती है, माँ बाप कोट जयान नया द पाते। फिर जयान लड़का पर मरनी भा तो नहीं की जा मरनी।”

मैंने चाचा चाचाकी ये बातें सुनी और सुनकर कमजोर प्रति मरा श्रद्धा ज़र गयी। क्याकि मैं अच्छा तरह जानता हूँ कि हम समाजमें एक बहुत बड़ा ज़र एसा है जिमका नाम हा तुम्हारा लड़कियाँ ज़रनाम जग्ना होता है। मुझ हर एसे आत्ममीमे नफरत है आ किमी लड़की ज़रारेम रात करते समय उमरे चन्द्र पर आ ज़र करता है। फिर जभा हमारे समाजमें आत्ममी ज़रूपम ज़र फूल गह हैं। ज़रा क्या है, ज़मे व क्या समयें? ज़राजा जाहम उनकी कुम्भित मनापुत्तिथा वर गन्गा तगाग करनी है जिमम ये नरजके कीड़ रेंगते हैं। हमें तो जान एम आत्मा चाहिए जे।

फलाका उन्नति करें, क्रिमा भा अपरोधका परमाह न करें जीग उनको जो अपना समीपताके कारण कला या कलाकारका अपमान करते हैं ऐसा ठोकर मारें नि आख सुलने पर गाग्गा भरी टुनिया भी उन्हें फलाका भरा लगने लगे ।

मने उसा क्षण निश्चय क्रिया कि म इम वार कमलासे अग्र्य मिलूंगा । पर दुठ पसे कारण आ गये कि मुझे निना मिले ही चला जाना पटा । फिर पूरे एक वष तक मै चाचाक पास भा गहों जा सका । इम वार यद्यपि कमलाको देखनेका इच्छा था । ३० ए० का पराक्षा दकर जन मे गर्माका दृष्टियासे घर गया तो पिताने कहा, “तू पयानपुर चला जा । त्रकशोरका निमंत्रण चाया है । खुद भा वचारे रूद मार रह चुके है । हम लोगके तो जानेम बडा झभट है पर क्रिमाका जाना जरूरी है । उनका लडकीका शादी है ।” मने पठा, “बडा लडकी का ।” उन्हाने कहा, “नहा, कमला का ।”

मुझ आमतौरमे विना गान्गीमें जानेमे तरलीफ होता है पर पता नहीं किम प्रेरणासे में वहाँ एक निवम पहले हा पहुँच गया । वन एक तहमील थी । देहात और गाँव दोनाका मिश्रण । लोगोने मुय दस साल बाट रखा था , अत जल्दा पचना नहीं । फिर तो गाँव अपनी प्रकृतिके कारण मैने बहुतसे काम ओढ़ लिये । वरात लार्गेरमे आयी थी । पूरा गान्गी खाम गे गयी पर म कमलाका दग न सका । भापराके समय रात अविह हो जानेसे सो गया और फिर जनतासेका देव भाट करना मेगी ब्यगी था, अन मुय वगी रना रना पटा । चरते समय दोना टलाम कापा

थगडा-मा हो गया । लडकाले लडका साथ ल जाना चाहते थ और लडकीपालका क्ना था कि पिना नहीं हागा । लडकाका तयीअत खरान है, एक ता इतना लम्बा मफर फिर ट्काका कम भग हो जायगा, उमका पिना फिर हो जायगा । उन्हे लडकाको मारना न्ना है । लकिन आगिरकार लडकालाका हा जात हुड । कमलाका पिनाड करना हा पटा ।

घरमे स्टेगन ता माल था । बारातका पहुँचाने मुये भी स्टेगन जाना पटा । क्याकि मामान अग्रिक था और उमा गाढामे लाहौर 'बुद्ध' क्ना था । स्टेगन पहुँच कर मालूम हुआ कि गाडा चार घटे 'ल' है । ठेका स्टेगन । स्टेगन माम्कका टन्डा पूरा कर देने पर वे स्वय य सन काम करने लगे । म मुक्त हो गया । स्टेशनके पाठे आमके घों छायाकार वृत्त थे । वही पर दरियों पिळी । सुनह सात बनेका समय था । चार घट लट हानेक रागण गाटी ग्यारह बने आती । उन मारे घराता, परातिनाक भोजन आन्कि प्रत्य परनेम लग गये । बरानियाम कुठ म्नान करने, और लाग इन्तनाम करने और माफी गण्य मारने बैठ गये । कमलाकी पालका एक फोनेमे, एक पडकी आटम सवमे अलग टर रक्की था । मेरे विल्ल रहन्त कर कमलामे कम चलती चलाता मार मिल लनेका टच्छा उठ स्नी था फिर वह वामार भा तों था । पर हिम्मत नहीं पट रही था । उमसे जो एक नन-बधू हो, उममे जो टुनियाकी ननराम गैर हो, बात करना मुय एउ गुनाह लगना था । तमा एक नौकरानान जो पालकासे साथ आयी था, जाकर कहा, आपको

‘बहिन’ बुला रही ह। म चला गया। समीप पहुँचते ही एक बड़ा धीमा और मीठा स्वर मुनाया दिया। उमने रहा—

‘आओ, अब ता तुम बहुत बटे नो गये।’ और इतना कह कर उमने पालनाका एक तरफका पदा बित्तुल उठा लिया और बोली, “आआ बैठ जाआ।” मैं शिक्षकते शिक्षकने बैठ गया। उमने किसी प्रकारके आउम्बरका प्रदर्शन नहीं किया, नम्फार तक नहीं। उसके म पहल वाक्यने दस सालकी दूरा मिंग दी। मैं कुछ सयत होते हुए बोला—

“तुम्हीं कौन छोटी रह गयी हो।” वह एक फाफ़ी हँसा हँस पडा। वह एक उम्ता मलवार और ओम्ना पन्ने थी। बहुत दुबला, कमजोर और पाला लग रही था। बधू का तरह वह तमाम आभूषणासे सजा थी। मने या ही बात चलानेको कहा—

‘सलवार कपमे पहनने लगा हो?’

“राहौर का है,” व्यग्यसे वह बोला।

म चुप रहा। उमने नौरानाको बुलाकर कहा—“उपर चला जाओ, मिमाको मधर मत आने दना।” फिर बाला—

“दस माल बाड मिल् रहे हो। लडका न होती तो तन देवता कैसे नग मिल्ते?” मैं चुप रहा। मरी आँखाके सामने तमाम पिठग बातें नाचने लगीं।

“मरे घरक पास तक आते ये पर मरे यहाँ आनेम तुम्हारे पैर थकते थे। बुलाया तन भी नहीं आय। आज भा अगर न बुलाता तो शायक नहीं आते?” मैं कुछ बाल न सफ़ा। इतने

मनेसे गिरायन करनेवाले भी जीवनम कहीं मिनते ह ? वर फिर बोली—

“भेरी गादीमें कैमे आ गये । अच्छा हुआ चले आये । उतुत मानता मानी थी, तुम किमी तरह आ जाते तुम्ह देख लेती चलती मार ।” यर ‘चलता वार’ उमने कितनी दर्द भरी आवाजमें कहा था । वह कुठ रुक कर फिर कहने लगा—

“तुम जैसे ही आये मुअ मारूम हो गया । यद्यपि भीतर नहा आये तुम । मिटाई मिनगाइ आ । मोचा फौन जाने लोग राम कानमें भूल पायें और तुम गर्म और तरल्लुफकी वचहसे याहा रह जाओ ।” मुझे याद आया, जय में आया था तय नाशता कर लेनेक बाद एक नाशता और आया म । नौकगनीने पृठने पर कहा था, “भीतरसे भेना है ।” मैंने समझा मौमा जाने भेना होगा । और यर भीतर वाला नाशता ही मैं ठीकमे कर सहा था क्योंकि यह अच्छा था । रिगाह आत्मि दा प्रसारता चीनें मना करती है । उउ मामूली और कुठ स्वास ढगसे । वह कन्ती रही—

“समझम नहीं जाता तुममें इतनी शर्म क्या है ? इश्यका चाहिए था तुमको लडका बनाता, मुझको लडका ।” इतना कन्कर वह हँस पडा । पर मैं सामोण ही रहा । उसने पृठ—

“ये मुन्नी क्या ? कुठ उगम लिख रह हो । तुम्हारे मारेमे तो मुना था तुम काफी खुगामिनान हो ।”

मैंने कहा, “बचपनकी बातें याद आ रही है ।” वह पुनक उठी “मच तुम्हें बचपनका सय मतें याद है । मैं तो जानता थी

भूट गये हाने । तभी न चित्ता रहकर भी तुम्हारे गिग कमला मर गयी थी ।”

मने कहा, “चुप रहा, क्या करूँता हो ।”

वन् बोला, “गल्लन कहता हूँ क्या ? या तो अपनेको उडे आदमी समझते रह जागे । साचते होंगे काल्जम पढ़ता हूँ और वह एक मामूली पत्नी गिवा दहाता लडका, उममे दूर हा रहना अच्छा । ज्यादा पन् लनेका तुम्ह घमड नो गया हे । यहाँ तो गँवार ही रह गयी । बहुत चाहा, बहुत सर पन्का पर मेरी चला ही नहीं । काग, म भा काल्जमें पढ़ पाता ।” इतना कहते कहते उसको आवाज डून गया । मने देखा जेमे वह यथासे भर उठा हे ।

मैने कहा, “अच्छा चुप भी रहो, बहुत कह चुकी हो ।” फिर जैसे वन् सचमुच यन् प्रमग टालकर अपनेको हटका करता हुद बोली—

“गाढा स्न करोगे ?”

मैने कहा, “म शकदा स्नूँगा हा नहीं ।”

“क्या क्या क्रिमासे मान्घनत हो गया हे ?”

“नयी तो ।”

वह हँमते हुए वाला, “मैने सोचा शायन् काल्जम क्रिमासे मोहन्त हो गया हा ।”

मै वाला, “क्या काल्ज मोहन्त करनेकी जगह हे ?”

उसने कहा, “लडक तो यहा समझते हे ।” उसका यह चरान सुनकर मै चुप हा गया । थोडा दर बाद बोला—

“तुमने निर्मीमे मोह-रत की है।”

“फोटि टम लानक मिला ही नहीं।” उर मुमकगते टुण गाल।  
मैने कहा, “मैने तो सुना था तुम्हारा निर्मीमे मोह-रत हो गयी है।”

उमने रुठ कटी आपानमें रहा, “यह नगों सुना मैं आयाग  
हूँ, वरमाग हूँ ? कि फर नहीं, न जाने कितने लडकामे भेग  
मन्धप है ? टपर उर कानफरोंमें नाचना-गाता फिरती हूँ ?”  
मग चैत्रा फर पग गया। मैने उमर मुम्बकी ओर दन्वा निममें  
घोर उपना और उणाके चिह्न पें। मैने गान गन्नेका गन्नेमे उट  
मनेमे पूजा, “तुमने नत्य-कला कहामे भावो ? कमला, मैने  
तुम्हारे नयका उटो ताराफ सुना है।” मरा गत उनकर उर न  
हैमा न मुमकगयी, वमे ही गम्भीरतापूर्वक गेला—

“माखा नगों है ? लकिन मीम्बना चाहता थी। इतने ही  
पर तो यर हाल है—अगर मीम्बना तो क्या होना अर उम  
उममें मीखूंगी।” इतना रहते-रन्ते उमकी आपान जैसे  
उगामाके ममुटमें टूट गयी और वर इतना पैनी दृष्टिमे शून्यम  
देखने लगा कि मैं महम गया। उमके चेहरे पर जैसे पयम्की  
उता पाहकर भी लिखा दर्द उमट आया था। मरे मुवमे  
निकल पटा—

“कमला !”

उमने कहा, “कगो ?”

मैने कहा, “तुम्हारी तनीयन म्गान है—ल जाओ।”

उमने कहा, “क्या ? क्या लनेमे तनायन अच्छा हो जायगी ?”

मैने कहा, “हाँ आराम ता मिलाग य।”



वह बोली, “मुझ आराम नहीं चाहिए। और अगर लेटना हा होगा तो एक साथ चित्तमें हा लट्टंगा।” उसकी आँखें बैठी हा बनी रहा निम्तेज, पैनी, गून्यको फाडकर खा जानेका प्रतीशाम। म घबरा उठा।

मेने कहा, “रमला, गम्भार मत बनो। खाडा देखने लिए तो मेरे सामने खुश रहो।” मरा इतना कहना था कि वह खिल गिनाकर रूम पडा। लम्बिन ऐसी हँसी निसक पाठे कोद अनुभूति नग। भयानक। मिष्टारियाके तमले सी। म सर झुका कर बैठ गया। मुझे परेशान देख कर कुछ शांत होकर बोला—

“जानते हा में कहाँ जा रहा हूँ।”

मेने मुसकराकर कहा, “लाहौर।”

व भी बोला कुछ मुसकराकर, “नहा जी, मरने।”

मेने कहा, ‘चुप रहो। क्या मरने मरने लगायी। शुभ अवसर पर एसा बातें नहीं की जाता। तभीयत तो याही खराब हो जाता हे। वहाँ पहुँचागा सन ठाक हो जावगा।’

वह बोला, “यह तभीयत ठाक होनेके लिए खराब नहीं हुई हे।”

मेने कुछ झल्लाकर कहा, ‘कैसे?’

उसन कहा, ‘मुझ टी० बा० हे।’

मै चौक उठा, पर सयत होकर बोला, “ताक्या हुआ? हौमला गम्या अच्छा हा चाआगा।”

वह बोला, “हौमला हा ता नहा है। फिर एक गँवार और

देहाती बनकर जीनेमे मरना ही अच्छा ।” कहकर वह एक फीकी हँसी हँसने लगी ।

तभा अचानक उसके पति पर दृष्टि गयी जो कुछ दूर पर खड़े खड़े किसीसे बातें कर रहे थे । नाटे और मोटे, सूट पहने हुए । बड़े भड़े । कमला जितनी हां टुंगली पतली, सुन्दर थी, वह उतने ही नाटे मोटे और भड़े थे । पढ़े भा ये तो गायद हार्द स्कूल फेल । रुपया था, व्यापार करते थे ।

मने पूँछा, “देखा उनको—पमन्द हे ।”

वह हँस पडी और मुँह मिचका कर बोला, “उम गणेश जी ऐसे है—मोटे धमधूसर ।” मै भी हँसन लगा ।

मने पूँछा—‘शान्तीके पहले कहा देगा था ?’ उसने ‘न’ सूचक गदन हिलायी । फिर बोली—

“शान्तीमें लडकियोसे कौन पृच्छता है ? फिर मुझमे जिसका हिम्मत थी, जानते ही ये मै मना कर डती । सैर, बानूजाक सर की बला टली । बेचारोकी बडा मरनामा हो रही था । ये लोग भी अच्छे ही ह—नेवल सूरत पमन्द का, दहज-ओहेज भी कहा लिया ।”

तभा मुझे एसा लगा, जैसे कुछ लोग मुझ गोज रह है क्याकि गाटा आनेका समय हो गया था । मै उठनेको हुआ । मग न्दिल भर आया था । उम थोडी देरकी बानचातन मुझे दर्दम भर लिया था ।

मैने पूँछा, “मेर लायक कोन सेना ।”

वह फिर फीका हँसामें बोली, “मेरे लिए ? मेरे लिए अत्र

कुछ नहा चाहिए। मने जो जो चाहा मुझ नहा मिला, मुझ नहीं दिया गया। और अब आखिरा वक्तम जरूरत भी क्या ?” कुछ रुककर फिर बोला, “तुम्हारे चाचा कह रहे थे तुम लम्बे हो रहे हो। अम्बाराम काफी लिगते पढ़ते हो। म तो रह गयी। बहुत सी चीज कहना चाहता था, लिखना चाहता थी, पर टम लायक नहा हूँ। कुछ एमा करो कि यन् दुनिया बदल सक, हम खियारा आजात भा लोग मुनें और सुननेका जरूरत समर्थे। काश ! म तुम्हारा तरन् गेती तो दुनियाको बताती कि एसा ज़िन्दगासे लटका का गला घाटर भार टालना अच्छा हे।”

मग ओखासे ऑसू निकल पडे और म एक क्षण भी अधिक टन्गेनेमें अपनेको असमर्थ पाकर तेजासे चग आया और काम करने लगा। गाडी चलते समय उसने इशारा किया। म डबके साथ टौडने लगा। उमने कहा, “देखा भूलना नहीं चाह कमला मर भा जाय।” और फफक कर रा पडा। म पाछे छूट गया और वह ओखासे खो गयी।

आर आज कमला मर गया। जाम आता है मै यह वाक्य ‘कमला मर गया’ बार-बार दोहराऊँ। तब तक दोहराऊँ जतनक दुनिया उसे सुनकर यह न माचने लगे कि आखिर वह क्या मर गयी। एक पौधा था जिसे पनपने नहीं दिया गया, जिसे कुचला गया, जो अन्तिम साँस तक इस कुचल जानेके खिलाफ प्रोटोह करता रहा और दुनिया जिम पर हँसना रही और आज जिसे भूल गया। मने नमकी जरूरत भी नहीं समझी कि कमलाका मरना दो लाइनम लिख देता। कुछ एमा लिखनी जिममें कुछ

वरमात अत्र भा आता हे

विचार नेता, कुछ अनुभूति होती, कुछ सपेना होती। पर यह 'रुमना मर गया'—विचार गूँथ, हन्य गूँथ, सपेना गूँथ-सा वाक्य—ऐसी तो न जाने कितनी 'रुमलाएँ' रोज मरती ह। मोई म्हों तरु मोचे। पर पर रुमना, जैसे लगता है तुम मर गयी तो कोई बात नहीं पर न मरती तो अच्छ था खैर अत्र तो रुमला मर ही गयी। फाग, वर अत्र भी जीती रहती। पर जीनी केमे ?

## टूटे हुए पत्त

मेरा ऑखोम आनकी गाम जल रहा है । भावनाओं नस नदी का भोति जिमक फिनारे म एक टूटे हुए पत्थर पर बैठा हूँ, छलक उठा ह । सूरज टप रहा है । नदीका लहरें लाल हो गया ह । तिनक सपनाका फफन बन कर खामोशा चारा ओर छाने लगा है । नदीकी बांच धाराम एक बास पडा है, जिसपर कत्रतरा की पक्ति पैठी हुई जल झाडा कर रहा है । गायद वनके लिए ही यल बॉस टाल दिया गया है जो कि नीचे टानाचे तार द्वारा घाटमे बंधा है । मेरी ऑखें इन कत्रतरापर जम-सा गया है । टपते हुए सरनकी लाल रेशमी फिरण उनक फडफडाते हुए पखा पर झन्झन्हा रही ह । य कत्रतर छाटे छोटे गोल घेराम उड उड कर लहरोम डुबकियों लते है और बॉसपर आ बैठते ह । उनके फडफडाते हुए पख ही इस खामोशाको भग कर रहे ह । कितने प्यारे लगते ह ये ! गुशामे भरे हुए, मस्ताम सरापोर । काश, आदमीका ज़िन्दगी भी एसी ही होती, जमे भी दुनिया उतनी ही अच्छा लगती नितना वन कत्रतराका ये लहरें लग रहा ह । उमका चिन्हागाम भा फोड एसा आधार होता चनों बह जावनक सघषाम डुबकिया लगा गान्तिपूवक बैठ अपने पख फडफडा सन्ना । लगना है मैं गलन रूप रहा हूँ । सयक जावनमें एक निश्चित आधार है । मयको दुनिया अच्छा लगता है, खुशाम भरा हुद, मस्ताम टपा हु ।

तमा न उम तिन गीगसे यह पठने पर कि जिनगी क्या है ? उमने जगप लिया या 'मस्ता और आनन्द' और तना रहते-रहते व गोग चुलबुला लटका टतनी जोरका टहाका मार कर रूमी थी कि मेन पर गववा हुआ गागा गिलाम नाचे जा गिग था । जोरमे उर्माको पाठ धक्का देती हुई एक अँगुठाई लकर रह उठ गयी हुई या और एक मस्ता भरी लपगाहाक माथ तना रह कर चली गयी था कि 'में उन्हें बमकूप समझता हू जो तुम्हारी तरफ मुँह न्नाये गम्भार होकर मोचा करते हैं कि निन्गी क्या है ? निन्गी मस्ता है, मस्ता—एक गम-गम चायना प्याला । खुप पियो, दूमरोंको पिलाओ ।' मैं अपना वाका चाय खम करते हुए उन जमान पर खिबरे हुए सँचने टुकटोको देख रहा था और दरसे मना रहा था कि मैं तो बरसात होगया, जानको मस्ती मान लेनेका पता नहीं क्यों तम तिममें कोई उमग हा नहीं उठता, गायक गालके गजोंमें बमकूप होऊँ, पर य लटका, कुछ ऐसा कर कि, जीवन भर जिनगाके गोरम यही मोचती रहे, युग रहे एक युगनमात्र बुलबुलकी तरह निन्गी का जामनी टाल पर चहका करे । उमके हर स्वयं प्रमन्नताके पमे ही डन्द्र धनुष लहराते रहे, उमका हर अंगमे निन्गीकी मिठाम पमे ही बाँझ करे, उमका हर उडान गजनम पर मोया गुन्गुनी-भी हो, पर पमे ही चक्कर—मुजम्मिम गगन बनी रहे, गुन हँमे दूमरोंको रूमाये ।

गालक पिना एक धनी जान्मी ये । जारामने मभी मापन उमके पैराके नाचे पापड़ो-मे मिठ ये । तुम्ह-क्या है, उमने

जाना ही नग था, ऑसू भी निकले थे तो खुगासे भर हुए । वह एक ऐसी तितली थी जिसके चारा ओर फूलके भारसे लदा हुई उसतकी जवानी झूल रही थी, पनझडकी कल्पना भा गायद उसके लिए दभर थी । मुझे कभी-कभी लगता था जैसे चिन्गीको मन्ती माननेके लिए वह मनवृ है ।

एक वष बाद उसकी शादी होगया । लडका पग लिखा, मुशील और अन्ना नौकरीपर था । उसकी खुशी इन कृतुतराके धुल हुए पग्वानी तरह और निम्बर आयो थी । उसके भाग्यपर लोग इषा करते थे और वन सरलहत्या मन्तीकी गुलाबी पसुरियोके ढेरपर बैठा हुई खुशाफा धूपम अपने सतरगे पख मुग्ना रही थी । म उन टिना उसके पडोमम रहा करता था । उसके यहाँ म ननुधा आया चाया करता था । एक दिनकी बात याद आता है—म जब उसके यहाँ पहुँचा तो उसकी माता ऑखें भरी भरी सी थी । पृछने पर पता चला कि उनका कहना शाला चिटकुल नहीं मानता । उनका कना है अब वह बची टुड, शादी होगया, कुठ गम्भार रना सीखे, चञ्चलना छोड द, गरारत न करे । उस तरह वह अपना जिनगा कैसे चलावेगा ? लकिन वह जैसे सुनती ही नहीं, हर समय ऊधम मचाया करता है । मुझे लगा जैसे जिनदगाके लिए गम्भारता टनिया ज़रूरा समझता है । कितना गसमश है टनिया ? यन चञ्चलना और गरारत भा बचे भाग्यसे मिलता है, कितने दिन यह जापनमें रह उतना ही अच्छा । उधर शीला और मन्त थी । उनका ऑगासे लगता जैसे वन वन रही गो—‘ऊँ कहने दो टनियानो—उमका परवाह हा क्या कर हम ।’ उसका शरारताकी

बरमात अब ना जाता ह

पाँवें खुर्ची हट थी और उमका किल्लागियोसे घर गूँज रहा था।

अब यह घटना यकी न्वम-सा हो रही है। चाहूँ तो कुछ और मोच मरता हूँ पर पना नहीं क्यों जी नहीं करता। यों खुशीनी बातें कुछ ज्यादा याद भा नहीं रहती। फिर यह घटना हुए भी ता लगभग तम वष हो गये। मुझ आश्चर्य हो रहा है कि इस समय मुझे शीलाकी याद कैसे आ गयी? अच्छा होता उमकी याद इस समय न आती। यह सॉझ, यह डूवा-डूना-मा मूरज, यह छलका छलका-मा अँग्रेग, यह मूलापन, यह सामोगी और यह एक-एक रुके मूलापनका उड-उडकर नगीके तटपर गने ऊँचे-ऊँचे मकानाके मोन्वोमें जा-जाकर बैठना यह क्या मम है मुझे उतासीने भरनेके लिए? नैर, मे भी इस एक क्यूतरका तरह, जो समी वनी बाँसपर डोड नाने किनारेके तम ऊँचे मकानके उम मोन्वेमें टुनकर बैठ गया है, गालाको अरमोडेमें छोड चला आया था। पिनाकी कली हो गयी था आगरे, और मे उनके साथ फिर आगरेमें ही बस गया। अरमोडा छू सा गया, आगरेके ही निगामा-से माने जाने लगे हम लोग।

अरमोडा छूटा, गीला छूटी। फिर जिन्दगाम कौन एक दूमेरकी याद करता है। आज-कलकी दुनियामें मम अपने-अपनेमें ही लगे हैं। सगे मन्व-या तरु तो अगर दूर-दूर गहरोंमें पड गये तो एक तरसकी याद नहीं करते, फिर पाम पडोम और एमी मामूली जान पहिचानकी मुत्तन कै तिनकी होता है। जामे पत्र-व्यवहारका होना तो एक बहुत बडी बात है। यहा हुआ गीलाके साथ। इन



दस वषा तक उमके वारेम कुठ पता नहा लगा । को ज़रूरत भी नहा थी पता लगानेका । उमका अपनी टुनिया था, वह भा हर तरसे भरी पुरी, फिर क्या करना था । एन्तम भूत नसलिए नहीं पाया कि उस जेमा शोख और मस्त लटका मने अभा तक दूसरा नहीं देखा ।

उधर दो महीने पूव ऐसा हुआ कि मुझे ममरी जाना पडा । याता एक रूम मित्रका निमंत्रण था, फिर किसी पत्रतीय स्थानमें कुठ दिन रहनेका लालच मेरे लिए बहुत बडा चीज है । एक दिन ऐसा हुआ कि घूमकर हम लोग लौट रहे थे, थक बहुत ज्यादा गये थे, मित्रने कहा—‘चलो पासमें हो एक रेस्तराँ हू वहा चाय पालें ।’

मैंने कहा ‘ना भाइ, घर ही चलो । फिर अगर चाय हो पीनी है तो अपने शास्त्रीय रेस्तराँमें पियेंगे ।’

वह आँग दवाकर बोला—‘चलो भी वहाँ तितलियों सन करता हू ।’

उम समय मुझे कुठ अच्छा नहीं लग रहा था । थक इतना गया था कि ज्यादा कुठ रहने या झगडनेकी भा विम्वत नहीं रह गया था । मैं चला गया । रेस्तराँ त्रिटकुल नया था और करानेसे सजा था । मालिकने चलानेके लिए दो लडकियों रख ली थीं गायन उनमेंसे एक गैंगो-इण्डियन भा थी । दोस्त साहब बोले—‘भू, मुझे तो एक पग हिम्का ल लेने दो, मेरे लिए तो ज़ि दगा रही है ।’

मने कोट आना-जाना नहीं का । कुठ सुम्न सा खामाश बैठा रहा । चाय लकर वह गैंगो-इण्डियन मिस आया । मेरे सामने ट्रे

वर्षात अर मा आता है

गवने हुए न सुमरगते हुए उनमे मोली निमका अर था—'ओफ  
ओ, खुत निनोड नर तरगीफ ला रहे है ।'  
नेमन मोरे, 'क्या रुद्ध अर आनेका इच्छाक न नरी हुआ,  
न तुम्हाग जात-भग सुमरान खुत यर आता रहा ।'

मेने टमा नच आव उठाकर उमर ओर देखा । मुये न  
इतनी प्रमृगत ल्या कि टुवाग मेरा अँख नी नहा उठा और मे  
चुपचाप चाव उनाने ल्या । मेरे नेमन पूजे लगे, यह नयागली  
ओरग नरी है ? उमे मियाआ—वह खुत गमाता है । मेग  
मामान उमाने हाप भेवना ।"

ओर यह 'ओ गाट " रहती हुट चला गया थी । थोनी देर  
नर व् लटका आयी । मफे मरगार और मफे ओइनी पने ।  
गन्भार और मुन्धर पवित्रता अङ्ग-अङ्गमे टपकता था । मेरे नेमन  
णद्धर उमर ओर देखन रह । तुउ सुमरगये, कुठ बोले, लेकिन  
न चुपचाप उनका मामान गवर चली गयी । उमने जानेने  
नर गायर अपना बेप मियानेने लिये सुभमे नेर—'वरा गन्भार  
लटका है, नग-मा मो लिय नरी दता । रेमरगमे णमा लटकाने  
गवना हा नरी चान्पि । यहा तो मन् पुरलुक् जातमा चान्पि ।  
इतनी हमान और त्तना मुटानगा । तुउ ममझमे नरी आता ।"

मे मोचता ग्ग, आदना अगर अपनेने नर दृमरेन ओरमे  
मोचने ग्गे ता टुनियामे निमरका भा ममभनेने गन्ना न करे ।  
पना नरी उमर निन्गाका यर कौन-मा परिच्छे ने, उमर  
लिपर क्या वान ग्ग ने, हम क्या जानें ?  
नम लोग द्राफा देर तर बैठे रहे । न नरी आया, नर वृ

ऐंलो टुण्डियनमिस कड बार आयी और पृष्ठता रहा, और मेर टोम्त से हँसा मज़ाक भी करता रही। मै चुपचाप चाय पीना रहा और सोचता रहा, वऱ डम मिसकी तरह मस्त क्या नहीं रऱ पाता ? वह इतनी गम्भीर क्या हे ? गायऱ उसे रेम्तरॉफ़ा वातावरण पमन्त नहीं। अगर नहीं हे तो वह किमलिए काम करनेको मजदूर हे ? मेरे दिलम उसके लिए एक सहानुभूति घर कर गया। जितना हा मे सोचता था वह सहानुभूति उतना ही घना हाती जा रऱ था। और मनमें उसके हर रहस्य जान लेनेकी उत्कण्ठा उमड पडा। कभा-कभी उमका चेहरा आँगाक आगे धूऱ जाता, लगना कुठ परिचित मा हे पर यह विचार उननके पहले ही मिट जाना।

उस दिन हम लाग चाय पाकर चले गये। रास्तेमें उमीके बारेमें बात चीत चन्ती रहा। टोम्तने बताया उसका नाम शाला हे। वह अटमाडाके किमा अच्छे परिवारकी लडका ह। मुने अचानक उस शालाका याद आयी। मेरा दिल बुरी तरह कोंप उठा। नस-नस सिहर उठा पर मैंन अपनेको धैय बँधाया वऱ सोच कर कि अटमाके भरम कोद एक ही शाला तो हागी नहीं। पर जाने क्या उम दिन दिऱ बचने रहा, रातको ठीकमे सो भी न सका। बार बार उमका खयाल आता रहा और उमका वऱ शोखी मस्ता दम शालाका गऱासी और गम्भारतामे टकराता रहा।

दूसर दिन मुनऱ होते हा म काद बगना निकाल अकल हा रेम्तरॉमें पहुँच गया और चुपचाप एक कानेम बैठ गया। वऱ चाय लऱऱ आया। म मर झुकाये कुऱ गिय रऱ था। मेरे मुखसे यका यक निकल पऱा, 'अगर कुठ तऱगाफ न गे तो बना दानिए ॥'

व गडी चाय बनानी रही और म लिखता ग्या । मचमें टम  
 प्रान कि 'चीनी एक हा चमच टाखियेगा' मेरी निगाह उपर उठ  
 गयी और उमका चेहरा मेरे आँसुओं पर आया । उमर टम  
 चेहरेमें भीगना गावा और चुटुगुलटवाला रूप नाच-नाचकर  
 हट जाता था । मैं उमक गया था, म एगोपगम था । मैं लिखता  
 रहा यद्यपि लिखनेमें जा नहीं लगा । म टमकी चली जा चुकी  
 थी । मैं बहुत देर तक बैठा काम करता रहा । व टमग चाय  
 लाया और बनाने लगा । मैं पूछ नी बैठा—

“तुम्हाग नाम गीला हे ?” वर कुठ बोली नहीं । चुपचाप  
 चाय प्यान्में डालनी रही । मने फिर पूछा—

“तुम अरमोकर मनेर मापनी लखा हो न ?” म  
 चुप रही, लेकिन मने टमका जैसे उमका चेहरा फक पट गया हे ।  
 जल्दीमे दध टार री हे और भागना चाहती हे । मेरे मुझमे  
 उमकी मेचैनी दख महमा फिर पडा—

“तुम मुझ पचान नयी रही हो, मैं प्रताप हूँ—तुम्हारे पटोम  
 वाला बेसफ प्रकाश । यह मिना चानी टाके ही तेजामे चली  
 गया । मैं मरम उग, मुझ ल्या जैसे मने उमके लिक्को चोर पहुँचाया  
 हे ? मेरा माग गरीर अनजाने ल्या । निमाग चकरर बाने  
 लगा । आँसे मयम छल्लग आया । चायक प्यान्मे उठनी हुई  
 गम-गम मापम मुझ टाकी पन्की गाम्वा और चुटुगुलट नाचती  
 हुट निमाड न और मेरे निमागम तेजोमे व गूट विगलना  
 तर टूटने ला । 'निन्गा मन्नी हे मन्ना—एक गम-गम चायक  
 प्याग मुझ पिया दूमगको पिलावा' और मैं मोचने लगा यह

सबकितना आज सब होगया । फिर वह उस दिन मेरे सामने नहीं आयी । मे दो तीन दिन तक लगातार गया लेकिन वह मेरा निगाहसे भी बचनेका कोशिश करती रही । प्धर मेरा लुट्टियों खत्म हो रही थीं । मै केवल एक बार उसमे मिलकर माफा माँग लना चाहता था । उसमे पृछना चाहता था, आखिर यह सब क्या हुआ ? यह सारा पग्बितन उसमे, उमकी टुनियाम, उमके स्रभासमें, मेरी समझमे जुठ नहीं आता था । चौथे दिन मे उतास सा एक फानमे बैठा था । वह पग्गे इण्टियन मिस गायद लुट्टी पर था । वन् चाय लेकर आयी हा । उमे दवर मेरी ऑखें छल्लला आयी ।

मै कहा—“शाला यह सब क्या हुआ ?”

वह जुठ नग बोली । चाय बनाता रहा और उमकी अँखा से टप-टप ऑसू गिरते रहे । मै जुठ पृठ नहीं सका । वह सिर नाचा फिर ही बोला—

“तुम फलसे यहाँ मत आया करो ।” और चली गया । मुझ लगा जैसे वतना रहनेमे हा उसे कितना कष्ट हुआ हो, उसे ददके कितने घने बादल चीरने पर हा ।

उम दिनमे फिर मे वहाँ न जा सका । वच्छा न रन्ते हुए भा लुट्टी खत्म होनेका कारण यन् चला आना पन् । फिर अपना उलझने हा इतने त्रिक रूपमे सामने आया कि उतना याद न रख सका ।

आनेका बाद आनसे दो माम पृव दोस्तका खत आया । लिखा था, गान्गे उममे मेरे वारेमे पृछा था और रो रहा था,

बसमात अत्र भा आता ह

रह गयी थी वरु अत्र टम रेम्नगोंमें काम नहीं करेगा। मालिक  
ज्यान्ती रहता है। उसे उमका अपमान करनेका क्या हक है ?  
वह स्वयंकी औगठ है, अपना अपमान नहीं सह सकता है। उसे  
भी मारेगी और खुद भी मर जायगी।

मने सोचा, अच्छ ही है वह वरु नाम छोड ड। पोटा-मा  
पनी नी है, क्रिमा तगुड और पर रर म्कू आन्निमें ने जाये।  
मारे ममाजरा सातारण अमा म्मा नहीं उन पाया है कि नोट  
गगफ लटका रेम्नगोंमें नाम करे। म्कू, अस्पताल आन्निनी नौकरी  
फिर भी कुठ खप जाती है यद्यपि उनमें नाम करने वालियाको  
भी लोग गुग करनेमे मान नहीं आते। फिर भी रेम्नगोंका नौकरीमे  
खुदा बचाये।

लेकिन पन्डू निरु गार लेस्तका फिर मन आया था।  
लिखा था, गायर अत्र छोड ड, अभी तक तो उमने निमी तग  
कर लिया। मने गार जा खन आया उममें लिखा था—'वरु  
गुग तो नरा है लेकिन लगना है जैसे वरु छोडनेमे मनपूर है।'

और आन मन आया था—'अब वरु कुठ गुग रहता है।  
उमका रहना है कि निमी तगह जिनगा करना है। वह नाम  
नहीं छोडेगी, जैसे चलता जा रहा है चलता जा रहा है।'

उम ममत्र घना अत्रकार छ गरा है। कुठ स्पष्ट नहीं।  
नेक लखें चमक उठती है। वरु अत्रमथा मेरे मन्निक्की है।  
कुठ मनभमें नहीं आता टुनिया स्या है ? म क्या है ? निन्गा  
क्या है ? मूरन टू गया है। चाग ओग्मे औरैरा बढ़ता हुआ मेरे  
सगन आ रहा है। मारे नृत्य उर-उर कर अपने-अपने घामन्में

आकर बैठ गये हैं और कम बॉस पर अकेला एक क्यूटर बैठा है। मुझे लगता है यह वही क्यूटर है जिसका एक पग टूट गया है—यह उड़ने में मजबूर है। अभी एक घण्टे पूर्व किसी गाराता लड़के ने जो नदी में नगा रहा था, नीचे ही नाचे जाकर उसे पकड़ लिया था। उमका एक ही पख उसके हाथ में आया और वह फटफटा कर निम्न भाग पर उसका पख जैसे बेकाम हो गया। लड़का ठरक मारे उसे बैसा ही छोड़ भाग आया था। मे तबसे देख रहा हूँ वह चुपचाप बैठा है। उसकी मम्ती, उमका खेल सब बन्द। वह अकेला है, तनहा अकेला—फोड़ भी उसके पास नहीं। पख वाला के साथ सभा उठान भर लते ह लेकिन जिसने पख टूट जाते ह उसका कोड़ साथ नहीं देता। वह अपने सारे साथियों मम्तासे डुबकियाँ लगाते हुए देखता रहा है और अब सबके चले जाने पर अपनी मजबूरी पर आँसू भर रहा है। वह बार बार पर फडफडाता है और उठ कर तबके मकानके मोरे में आ बैठना चाहता है। वह कोशिश कई बार कर चुका है, बालिशत आध बालिशत उठ भी चुका है पर जी ममोस कर रह गया है। शाग भी है कम क्यूटर-सी। उसके भो पर जिसा अदृश्य शक्ति ने तोड़ दिये है। वह भी चुपचाप जहाँ बैठा गया है बैठ गयी है। तभी तो वह कहता है—‘किसी तरह जिन्दगी काटना है जैसे चलता जा रहा है चलता जा रहा है।’ आजको वह है, हो सक्ता है कल को वह निराधार हो जाय। इस छोटेसे आधारका ही क्या भरोसा? जन्म माता पिता पनि सब छोड़ कर चल गये और आन उसका फोड़ नहीं। अकेली है अकली। इतना धन

गरसात अब मा जाता है

होनेपर भी आज यह एक पार्टी को मोन्ताज है। और ऐमा अमहाया-  
 वन्ध्याम उमकी मस्ती और उमकी मुमनान भी उसका साथ डोट  
 नर चली गयी। मेरा लिल भर उठा है, अँगरे ललली आयी हैं।  
 अभी वह नूतर दो-तीन फुट तक उट आया था। मे खुश था  
 कि किनारे तक आ जायगा पर वर रहरोमें ही गिर पडा और  
 अब निराधार बहता चला जा रहा है। गीला यह गही है, मैं यह  
 रहा हूँ, हम मर यह रहे हैं। जफ जीवन भा क्या है? एफ मनवूरी,  
 घेर घेर कर मनवूरी, यहाँ हम हसते हैं मनवूरीके ही कारण,  
 रोते ह मनवूरीके ही कारण। मनवूरी केवल मनवूरी, घेर घेर  
 कर मनवूरी। और उठ नहा है चिन्गी क्या ?



## वेवसी

समारम अपना पराया कोइ नहीं, जो अपना समझे वह अपना है और ना पराया समझे, वह अपना होनपर भा पगया है। न्मा आधारपर ना तुनियामें किसीको अपना मान पाता हू। इसालिए समाज-द्वारा निर्मित रिश्ताकी दावारें मुझे बंध नहीं पातीं यन्ि वे क्वल नामकी हें, यदि उनमें कोइ गर्मा नहीं, स्नेह नहीं।

मेरी एक माली है, नाम है मनु। या साली और जानाका रिश्ता एक मजाकका रिश्ता होता है, उनका स्नेह भा एक मजाक का आवरण लिये होता है, कहीं कोई गम्भीरता इस रिश्तेका नाम लने समय हमारे सामने नहीं आती। लेकिन मेरे गम्भीर स्वभावने खाना है मजाकको पनपने नहा दिया, मजाककी खींच-तानके कारण नस सम्बन्धमें कभी ज्वार भाटा नहीं आया, कभी चढ़ाव उतार नहीं दिखाइ दिया। वह किसी ठोठ जलाशयकी तरह स्नेह की चाँदनाम चुपचाप एक सा बना रहा। शादीके पहलेही एक बात याद आता है जब लडक्यालाका ओरसे सगाइकी रम्म होता है, उसी समय मरी इनसे मुलाकात हुई थी और तभी मुझे एक नय अपरिचित व्यक्तिके स्नेहमें वगात् बंध जाना पडा था।

सुनना समय था। दालानके सम्भोपर फेला हुई देशी अगूर का ल्नासे छनकर रोगमा धूप आ रहा था। रात भर ट्रेनमें जागने के कारण म काफी थका सा बैठा था। नहा धो लनेपर भी नींदकी

खुमारी नंगी गयी थी। तभी वह एक गुलाबी साड्यामें लिपनी हुई आयी और मेरे पास नमस्ते करके बैठ गयी। नौद आते समय हम क्रिमा प्यारे सपनेका स्वागत जमे निना हिल-डुले करते है, जैसे ही मैने उनका स्वागत किया। एक ता नौदम भरे होनेके कारण, दूसरे वह साग चातावरण एक मकड़ीके चालकी तरह लगने के कारण, जा मुझे हर क्षण लपटता जा रहा हो, मै निना हिले-डुले उस आरामकुर्सीपर कुछ मोचता-सा आँखें बन्द किय पैठा रहा। वह कितनी देर बैठी रही यह मुझे याद नहीं। मुझे खामोश देखकर उन्हें स्वय ही बोल्ना पडा।

“नाट भग है आपका आँवा में। आप भीतर जाकर सो जाइय नहीं तो तभीयत खरान हो जावेगी। जब नाशता बगैरह हो जायगा तब मैं चगा दूँगी।”

किमी नये व्यक्तिने मुझमे इतनी आत्मीयता भरे वाक्य सुनने को हम मिलते है। हम पहले वाक्यने ही हृदयके पासने किमी अनजान तारको झनझना दिया। मै मोना चाहता तो ज़ाब्र था पर उस समय तड़ा भदा गग रहा था। मैने या ही लापरवाहीसे कहा, “हाँ, जाने लीनिए, फिर देखा जायगा।” लेकिन मेरे चार चार मना करने पर भी वह मानों नहा और मुझे भीतर हमरेमें जाकर सो हा जाना पडा। यह जित्त मुझे अच्छी लगी। कभी रुभा हम भीतरसे चान्त तो कुछ ह और बाहरसे रहते कुछ है। उस समय भीतर दृच्छा अनुकूलनी गया जित्त हमें मन्त्र अच्छा गगता है और वास्तव्य भातर और बाहरका यह अंतर बहुत व्यरहार-युगल व्यक्ति हा ममक पाते है। जब तक मै मोना रहा

वह बाहर दालानम बैठी डम बातका निगराना करता रही कि जर्न कोइ आकर मुझे जगा न दे। वहीं कोइ शोग न हो कि मेरा नाद टूट जाय। लगभग दो घण्टे बाद किसी सन्ध्यामे मेरी आँख खुल गयी। मने देखा कि वह पास ही मेज़ पर नाशता लगाये ग्वड़ी है और मुमफराते हुए कह रही ह —

“अभी नींद पूरी नहीं हुई—नाशता कर लीनिए तब फिर सो जाइयेगा। आपमे मिलने बहुतसे लोग आये थे, मैने सपका मना कर दिया।” उस सारे वातावरणम मुझे यहा एक एसा प्राणी दीख पडा जिसे बिना किमी बनावटके मेरे आरामका चिन्ता हो। मैं नाशता करता रहा और मेरे महज़ एक ही वारक कहने पर वह भी मेरे साथ खाने लगा। जैसे वह जानता हा कि मुझस अफ़ल खाया नहा जायगा और दो बार कहनेकी मेरा आदत न हो।

म मिर्च बिटकुल नहीं खाता, उमने उस थोडी हा देरम जान लिया। समोसेक प्लेटम हाथ लगाते ही वह बोली, “इन दो को मत खाइयेगा”, और उसने उन्हें अलग कर दिया। बादमे मालूम हुआ उममें केवल मनाफ़क लिए मिर्च हा मिर्च भरी है। पता नहीं क्या मैने उनमेंसे एक झपटकर उठा लिया और उसे यह कहते हुए मुँहसे लगा लिया, “जब आपने मेरे लिए खासतौरसे बनाया है तब मैं ज़रूर खाऊँगा।” लेकिन इसक पहल कि मैं उसे मुखम रस सवँ उमने मुँसे छीन लिया और प्लेट दूर रखती हुई बानी, “मिर्च बहुत तेज़ है। आपको तफ़्फ़ीफ़ होगा।”

मैं सोचने लगा, अपने मनाफ़के आनन्दसे इसे मेरी तफ़्फ़ीफ़का

वरमात अब भा आता है

ज्यादा ग्याल् है। जहाँ स्नेह होता है वहाँ व्यक्ति मज़ाक भी ऐसा ही करना चाहता है जिसमें दूसरेको आराम पहुँचे तकलाफ नहीं।

मैंने कहा, “लेकिन मज़ाक तो खत्म हो गया। आपकी सारी मेहनत भी बेकार गयी।”

मेरे इस रुथनसे उमरा चेहरा गर्मि लाल हो गया। और वह अपनी झेप मिगती दुई बोली, “तो क्या हुआ?”

मैं चुप रहा। कुछ देर बाद बोला

“आप बहुत अच्छी है। आपका नाम क्या है?”

वह बोली, “मधु।”

मैंने पूछा, “आपको गाना आता है?”

उमने कहा, “हाँ, थोडा-बहुत।”

मे बोला, “सुनाइयेगा?”

उमने कोड आनाकाना नहीं की। चुपचाप हारमोनियम ले आया और गाने लगी। एक गाना गाकर वह बोली, “नीचे बहुत काम करना है। मैं अत्र जाती हूँ। आप बुग न मानें तो आपको फिर सुना दूँगी। आप तत्र तरु ग्रामोफोन बनाइये।” और वह रेकार्ड लगा कर चली गयी। मैं मोचने लगा, इम समय मेग कन्ना तत्र बडी आमानामे गल सफ्ती थी। लोग एमे अवमरा पर चूस्ते नहीं।

तत्र कन्ना क्षणाम अपने स्नेहमय यत्रहारके कारण ही उमने मुझे अपना बना लिया। मरे एमे भातुरुक आत्मा स्नेहके हाथा बड़ा जल्दी मिळ जाते ह। उम त्रिन दोपहरको मत्र काम

जल्दी जल्दी खतम करनेके बाद वह मेरे पास ही बैठी रही । कहती रही —

“आपको देखकर ऐसा लगता है जैसे कि मैं आपको बरसोमें जानती हूँ ।” और फिर अपने मन का अपनी ज़िन्दगीकी बहुत सी बातें कहीं । उसके सामीप्यने समयका लम्बाईका अनुभव ही नहा होने दिया । रातको भूय नहीं थी । मैंने उसे मना किया कि मैं खाऊँगा नहा पर वह मानी नहा । चिन्मने मेरा थोडा भी खयाल किया हो उसकी कोई भी बात टाल देना, मेरे बूतेकी बात नहीं । वह खाना ले आया ।

मैंने कहा—“खा लूँगा तुम्हारा रहना मान कर, पर एक भी पृथी रखने की पत्रमें जगह नहा है ।” मैं खाने लगा और आखिरकार उसने ही अपना हाथ रोक लिया और बोली, “अब आप मत खाइये ।”

मैंने कहा, “तुम समझी लेकिन देरम—बेजार खिला दिया तुमने । कहीं तमीयत खराब हो गयी तो ?”

वह दृढतापूर्वक बोली—“नहीं होगी ।” और उसने एक छोटे गीनेके गिलासमें शरापके रगवाला कोइ लाल दवा दी और मैं मुसकराते हुए पीकर सो गया । उसके उस समयके विश्वास भरे अग्ल स्नेहके प्रतीकके रूपम वह गीशका गिलास और वह लाल दवा बहुत दिना तक मेरी आँखोंके सामने नाचते रह ।

चलते समय वह बहुत रोती रही । घर भर उसका मज़ाक बनाते रह । मेरा भी नी भरा भरा मा था । मैं नहा जानता था कि एक दिनके हा अन्दर स्नेहका बन्धन इतना मजबूत भी

बरमात अब मा जाता है

हो मरना है। फिर दो मास बाद उसकी शादी हो गया। मेरा  
गाता उसकी गानेके एक महीने बाद हुई।

यह उममे दूसरी मुलाकातका अवसर था। इस बार भी वह  
मुझ वैसी ही लगी। उसकी सूनी माँगमें सिन्दूरकी एक मोमि रेखा  
को छोड़कर उममें और को परिचय जैसा नहीं सिखा  
गिया। सिन्हीं अपत्यागित घटनाओंके कारण भारत सिन्धुमें  
पहुँचा। सपनी शिकायतोंके पहाड खड हो गये। मरने स्वागत  
किया लेकिन एक मिनट मनमें। मेरा हृदय उस मारे दाग और  
बनायमें हृदय कोई एक ऐसा आधार चाहता था जहाँ मची  
महानुभूति हो, मचा म्नेह हो। वह मिला औरोंके बाद उसकी  
बाँवामें। उमने पूरन मुसकराकर मेरा स्वागत किया और  
मिना गिनायतका एक वाक्य कहे हुए ही मुझे पसानेमें तर देखकर  
उमने पम्वा हँकना शुरू किया और बोला, “आनकरका मफ्र  
बग तम्नाफदेह होता है। रास्तेम कोई तकलाफ तो नहीं हुई  
आप लोगोंको ?”

मैंने पूरे हुए दिलमें कहा, “आपको भी को शिकायत  
करनी है क्या ?”

वह बोली, “गिनायत कैसी ? एक तो लानके दिन, इनकी  
बारोंके चल्ती है। फिर दो-दो तीन-तीन जगह गाड़ी चल्नी होती  
है। गाड़ीका छूट जाना भी कोई खम्मम तो नहीं।”

मैंने कहा, “तुम ऐसा सोचती हो, लोग तो नहीं सोचते।”  
वह चुप रनी। मैं भीतर औरतोंमें बैठा था। घरमें तमाग औरतें थीं,  
मरणे माटे-सटे उगाहने लिये ही—पर वह जैसे लगता था अपने

सनेहमय व्यवहारके कोमल स्पर्शमे इन उल्लासनोंका चोटको सहला रही हो। नर नारीमे भरे हुए उस मजानम मरे निराधार मनको ऐसा लगता जैसे यही मेरी अपनी हो, और सब पराय। तभी तो छोटेमे लेकर बड़ तफ्फा कहना टाल देनेपर भा उसका कहना मानकर मुझ खाना पडा और वह बात दूसरासे तिलपर चोट भा कर गयी। फिर तो घर भरकी इच्छा उसीके माध्यमसे मुझ तक पहुँची। मने भी कोई आपत्ति नहीं की। इस बार हम लोग और करीब आ गये। कहा कोई दूरी, नहीं कोई टुराव चेमे रह ही नहीं गया। आडम्बरहीन, प्रत्यानहीन सम्बन्ध। एसा सम्बन्ध, जहाँ अपने मनकी हर बात कही जा सके, जहाँ एक दूसरेका हर क्षण न्याल रक्खा जाय, जहाँ स्वयं तक्रुफ उठा देनेपर भी दूसरे को आराम देनेकी इच्छा उमड पडे। वह हर क्षण मेरे पास रही और समयका बोझ फूल सा हटका हो गया। और इस बार चलते समय हम दानाको दुगुना तक्रुफ हुइ।

तासरी मुलाकात गौनेके अवसर पर हुइ, लगभग एक वर्ष बाद, और तीसरी मुलाकात ही ऐसी थी कि मुझ कुठ लिखना पडा।

इस बार उसके पति महोदय भी आये थे। उसके बहुत-से पत्र आये थे जिनमें लिखा रहता था कि 'वे' मुझसे मिलनेके लिए बहुत उत्सुक ह। वे बार-बार मुझसे मिलनेके लिए पूरी तैयारी कर लेते हैं पर किन्हीं खाम अडचनाएँ कारण मन्त्र रह जाते हैं पर अपनी उस अवसरपर उनमे जल्द मुलाकात होगी। मैं भी थोडा बहुत उत्सुक था, यद्यपि नये नये आत्मियासे मिलनेकी उत्सुकता मेरे दिलम कभा नहीं उठता। खैर। वे पश्चिमी साँचेमें ढल हुए

बरसात अत्र भा जाता है

व्यक्ति थे। पूरे अप टूट-टूट। घरपर भी सूट पहननेवाले। हर क्षण अँगरेजी ही बोलते थे। मिगरेट स्तनी पाते थे कि उमका तारतम्य ही नहीं टूटने पाता था। मुझसे उनका परिचय हुआ। वे बहुत देरतक फरमीर-समस्या पर बात करते रहे और मैं चुपचाप सुनता रहा।

बोली देर बाद जब वे नीचे चले गये तब मधुमे मेरी मुलाकात हुई। वह आयी कुछ उत्सास सी। मेने पूछा—“तुम अतक यहाँ थीं मधु ? मेरी आँखें तुम्हें खोजते खोजते थक गयीं।”

वह बोली—“नीचे उनके कपडे वगैर ठीक कर रही थी।”  
मेँ सोचने लगा, कितना अजीब है यह कि मेँ एक घण्टेसे आफर बैठा हूँ और वह नीचे कपडे ठीक करनेम लगी थी जब कि उसके खतोसे लगता था कि उसे एक एक क्षणकी देर असह्य है, मुझे वह फौरन देखना चाहती है।

मुझे मालूम हुआ कि वे निनमें दस बार कपडे बदलते थे और उमे हर बार उनका ठीकमे तह करनी पडती थी।

मेने कहा—“चलो अच्छी ट्यूनी है।”  
वह कुछ मुसफरा दी।

वह दो मिनट बैठा भी न थी कि हडगडा कर यह कहते हुए उठ गयी, “चलूँ उनके नहानेका इन्तजाम करना है।” मुझे उमका इस तरह फौरन चला जाना कुछ अच्छा नहीं लगा। फिर वह दो तीन घण्टे तक उहाँ नहानी बुलाती और मचाती-सँगाती रही और फिर वह ऊपर मेरे कमरेमें एक नया सूट पहने, मुँहमें मिगरेट



दबाये और हाथम एक पूरा 'श्री कामरुम' का टिन्ना लिये हुए आ पहुँचे और बोले—'अँगरेजीम !

“आपको यह जगह कैसा लगी ?”

मैने कहा—“मुझ ता वह हर जगह अच्छा लगती है जहाँ कोई अपना हो ।”

उन्हाने कहा—“यहाँ बिचली नहीं, पानी नहीं, दिलचम्पाके लिए सिनेमा बगैरह भी नहीं । में तो यहाँ एक दिन भी नहीं रह सकता । उड़ी परेशानी है । सोचता हूँ, बिना फैनक दोपहरमें सोऊँगा कैसा ?”

मै कहता ही क्या ? यही सोचता रहा कि उनकी भी मचवूरा है, आदत पड गयी है क्या करे ?

भोजनक समय उन्हाने मधुको ड्यूगी दी कि वह बराबर उन पर पखा झरे, नहा ता वह खा न सकेंगे । वह बेचारा पखा झरती रहोँ लेकिन जैसे कुठ बेमनसे और मै सोचता रहा उमे भी मरे साथ खाना चाहिए था । भोजनके उपरान्त वह फिर उनमें लग गई । गायद वे नीचे सोते रहे और वह बेठी पखा झरती रही । मै भी ऊपरक कमरम पडा सोचता रहा—“अच्छा ही है, पन्नी होती ही है इसीलिए कि पतिको आराम दे । फिर इतना स्नेह करनेवाला पन्नी मिलती ही कहाँ है ?”

लगभग तीन बनेके मेरा ओख लग ती रत्ना थी कि ये लोग ऊपर बगलके कमरेमें आ डटे और जोर-जोरसे गप्प मारते और खिन्खिन्नाते रह । मेरा नोंद जो आ भी रहा था, भाग गयी । रात भर गाडाम या भी नत्ता मोया था, मिरम दद होने लगा । पर उन

बरसात अब भा भाता है

लोगोना गोर कम न हुआ। उनके पतिके कहकहे दाजारों तकको कँपा देते थे। मैंने कई बार सुना कि वह कह रही है—

“जरा धारे धारे उस कमरेमें वह मो रहे है।” पर जैसे उन्हें इसकी परवाह ही न हो। उनके कहकहे और उनकी खिन्खिगाहट आती ही रही। मधु भा बीच-बीचमें जोरसे हँस पड़ती थी और मैं सोचता था उस निन्की बात निम निम वह मुझे मोता देग किमीको भी आने तक न देता थी। आगे घण्टे तक लगानार कगवटे बन्दनेपर भी मैं सो न सना। सोचने लगा पडा-पडा क्या इन्तजाम कर दूँ। मैं उठ खडा हुआ। कुरता टाल चल पडा। उहाँने जाते देस पूछा—“क्यों भाड साहन ?”

मैंने कहा—“स्टेगन, चलते ह आप भी ? एक घण्टेमें आ जायँगे।”

वे बोल—“ओ गाट, इतनी धूपमें मैं नहीं जा सकूँगा।” मैंने मधुनी ओर देखा, उसका दृष्टिमें बड़ी बेसमी खिलाई दी। जैसे यन् जो कुठ हुआ सन उसकी अनिच्छामे और यन् समझ रही हो कि मैं सो पानेमें अममथ होनेके कारण ही जा रहा हूँ। उसके ओठ कँपि। कुठ उसने कहना चाहा, पर रह गयी।

मैं चला गया। डेढ घण्टे बाद वापस आया। मिरमें बड़ी जोरना दन् हो रहा था। वह निम्ना तन् मेरे पाम आयी। मुझ देम्बते ही बोली—

“मिरमें तन् हो रहा है क्या ?”  
मैंने हाँ सूचन गगन हिला ली।

वह बोली—“मे अभी तेल गेर आता हूँ ।”

मै ऊपर बड़ी देर तक बैठा प्रतीक्षा करता रहा । आगे घण्टे बाद वह आयी, कपडे बदले हुए नहीं जानेकी तैयाराम । उसे देखते ही मेरे मुखसे निकल पडा—

“मने समझा था तुम तेल ला रही हो ।”

उमकी आँखें नीची हो गया । मुमनन उन्नीसिम बदल गयी । लाचारीके चिह्न उमके मुखपर अङ्कित हो गये और मे उमके उन्नीस चेन्नेको देखकर सोचता रहा—“जापनम सफन्ता चाहते हो तो अभिनय न्ना सासो । अभी यही नाचे किन्कारियो मार रही थी और अब । केसा अच्छा अभिनय है ?”

वह डूबती सी आवाज़म बोला ।

“एक बात कहूँ ?”

मेने कहा—“नहो न ।”

वह बोला—“आपका तरीयत नहीं लग रही है—चलिए आपको नगीनी तरफ घुमा लायें । वो भी चल रहे हे ।”

मैने कहा—“तुम लोग हो आओ, मै नहीं चाऊँगा ।”

मेरे इस उत्तरसे मेने देखा वह बहुत उदास हो गयी है । अत मै कपडे पहनने लगा और सोचने लगा बेचारी फँस गई होगी निमा काममें, नहीं आ सका । मन कहता था यह निरुत्तु गलत है । नाचे नाकर वह पतिने आगे सब कुठ भूल गया । उसे मेरी चित्ता हा म्या हो ? पर उसकी बेयमा भरा आँखें बार बार खिच जाती था और मुझ इस निष्प पर पनुँचने नहीं देती था । मै तैयार हुआ ही था नि निमाने बाहर आवाज़ दी । मै नाचे चग

बरसात भय भा आता ह

गया। मधुसे रहता गया कि एक माह्य आ गये हैं, मैं उन्हें पाँच मिनटमें बिना रुके आया। इच्छाक्रमे उनका विना रुके-रुके दम मिनट हो गये। मैं तेज़ीमे घरकी ओर बढ़ा। घग्पर पना चला, पति और पत्नी पाँच मिनट तक इन्तजार करके चल गये।

मैंने सोचा, हॉं देर तो हो हा गया, चलो रास्तेम परड लेंगे। पर न जाने क्यों निमागमें एर वात गूँज जाती थी। म्नेहना आधिभय समयका पायनी जेमी शृक्ला हमेगा तोड दता है, फिर पाँच मिनटका जगहपर पचीम मिनट भा इन्तनागी की जानी है।

मरे साथ वहाँके रिक्तेके कोड भाट थे, वे भी हो नित्रे। हम लोगोंने तेज़ीमे अपने क्रम प्नाये ताकि इह परड हें, पर म्दुत दूर तक इनका पना न चला। सूग्न डूब गया था। सौभ्रना धुंधला चारों ओर फैल गया था। उस रुचे निजन रास्तेपर, जो दोनों ओर घने पडोमे ढना था, काफी अँपेरा ज गया था। हम लोग बातें कम करते थे और केवल यह सोचते हुए कि इतनी जल्दी मिनती दूर निरन गये, तेनामे चले जा रहे थे।

मार्त बोले—“अँपेके कारण दर तर तो निम्बाइ नहीं देता। टाच होता तो देगते, गायन आगे जा रहे हा।”

मैंने पूछा—‘कोड तूसग रास्ता तो नहीं?’

उहोंने कहा—“हे तो, लेकिन बहुत गन्ना। उधरमे गायद नहीं गये होंगे।”

तभी दो काली आदृतियाँ मामने जाता हुँ निगात नैं। हम लोगाने सोचा, हो सक्ता है कँरे दूसरे लोग हों, अत पाम जाकर निश्चित कर लेनेपर हा टोंकना उचित होगा।

पास जानेपर बिरकुल साफ मालूम हो गया कि वही है ।

उहाने कहा—“बुलायें ?”

मने कहा—“शायद काइ प्राइवेट बात कर रहे हा । हम लोग रुकावट क्यों बनें ? वे जरूरत समझेंगे तो खुद साथ हो लेंगे ।” हम लोग भी बात करते हुए बगलसे निकल गये । मधुने मुझे देखा भी, पर वह बोली नहा । मैंने सोचा, पति पत्नी है, बहुत-सी बातें रहती ह, कोई मामला चल रहा है, हस्तक्षेप करना उचित नहीं । नदीके तीर तक शायद उन लोगाकी बातें खतम हो जायँ, फिर वहाँ हम लोग साथ हो लेंगे । हम लोग जल्दीसे कदम बढ़ाकर ढालपर जाकर बैठ गये पर वे लोग दिखाइ ही न दिये । उस समय पूणमासीका चाँद आकाश पर निकल आया था । दूध मा चाँदनी चारो ओर फैल गयी थी । नदाके किनारे बड़ी ऊबड़-खावड़ चमीन थी जिसमें खरजूजे और तरजूजेके खेत थे । ऊँचे-ऊँचे टीला पर मूँज और सरपतके सूखे झाड़ सोये हुए थे । हवा धारे धारे बह रही थी । गमकि कारण नदी सिमर कर एक नाले सी हो गयी थी । उसका पाट बड़ा चौड़ा था । लगता था बरसातमें काफी बढ जाती होगी । नदाकी ढालपर उतरते ही एक शिवाला था, पास ही एक कुआँ निम्न जगत सफेद थी । ढाल बहुत ज्यादा था, नीचे बहुत दूर गहरादम नदी बहती था । वे लोग उपर कुएँकी जगतपर ही बैठ गये । हम लाग एक बार फिर बगलसे हा निकल गये । उन लोगाने देखा भी, पर जैसे हम लोग कोई अजनबी हों, उन्हें हमसे कोई मतलब हा न हो । ढालमें उतरकर हम लोग नदाके तीरपर पानाके

पाम एक ट्रे पथपर बैठ गये। पानीमें लम्बी-लम्बी घाम हिल रही थी, निमपर चाँदनी त्रिरण फियल-फियलकर अत्रकागमे लुफा-छिपा खेल रही थी। दूर नदीका ऊँचा बगारा मन्ध मन्ध था। चाँदने एक कोणम होनेक कारण उसकी नाली परछाई उस ठंडी बालूपर मिमग हुड बड़ी भरी मानूम पड रहा थी। हवाकी लरोमे सगपतकी ऊँची-ऊँची त्रिररी हुई प्रतिमाएँ ऊबड बाबड जमानकी भुँडेगपर लिल उठती थी और उनके बाचमें छिप हुप छोटे-छोटे खगूनाके गेन आँचमें बूल उठत थे। आकाशक ताराकी तरह नदीकी लगी धामम कुछ अर-अर सफट पूल म्लि रह थे। कोई चिडिया तेनामे गर-गर नदीकी लगती बूती हुड चक्कर काट जाती था, उस म्बामोण चाँदनामे, सोय दुण बानापरणम एक मूँकी आवाज भर हानी था और उर नगाहाका पडडने बाहर हो जाती थी।

दिनना मन्ध ल्हा रहा था यह नागका माग बातापरण, और मैं सोच रहा था यह तुम्हक मनोरम रम्यम्यला कए तापकरकी दिननी भयानक नो जायेगी। चाँदका शानक दिग्गाकी जगल आग बरमेगी, रेगामने लगते दुण सगपतने पीले-पाल दूर लपगमे घबक लेंगे। यह ठण्ठी नारू पागल होकर, अपना लम्ब बाहे खोल, जमानमे आसमान तक उर चानकी मून तेनेका लच्छा लिय उडती फिरेगी, उस मासूम बगारक अरर सुन्वकर फट बाँगे, यह ठण्ठा जर खोलने लगेगा। यह पानाका घाम जो मन मनय माधा तरी ओढ़ना ओढ़ मड़ा है, कुन्ध कए पानानें गिर पन्गा। यह सारी निन्गा मौनमें बन्द जायगा। यह मनोरम रम्यम्यला,

मे सौचता हूँ, क्या सचमुच वह परवश थी ? अगर था भी तो क्या यह उचित था ? पतिप्रे आगे क्या नारीको अपना यत्तित्व मसल देना चाहिए, अपनी आराज घोर देनी चाहिए ? मे क्या जवाब दूँ ? और अगर कोई जवाब देता हूँ तो दुनिया उसे मानेगी ही कम ?



## प्रेम-विवाह

ऊठे-ऊठे फार बुँधुआरे गान्नाको हटाकर चॉट इम समय आनागनी नीली घागीमें तेनामे भाग रहा है । नीचे उपामे भोगे टुण पड-पल्लव लपटागने बुँधले आग्रणमें खामोग न्बोपे-न्बोये मिर झुनाये, मेरी आँन्वाके मामनेमे तेनीमे गुनगते जा रहे हैं । टवेमें पूणनया खामागी है । मर उठे-मप्रे पट ऊँप गह है । म्रानाभावन फागण मै नीचे टूक पर हा बैठ गया हूँ और मेरे गान्नी नय पर अपने नह मुन्ना कन्चेको लिये न मो गयी है । खिन्नीमे बपकर आते हुए टटी हवाक जोने उनके रोम-मे गानाको आन्मिता आहिम्ना वेणाक नटोर बपनमे मुक्त कर गह है और दा-चार हलके गान्ना फान्ना रोमक शारीक धागा-मे उनके गीरे मुखपर लपरा रह है । खिडकीकी ओगीनीपर मोनीकी बाल-सी लपकी पानाकी बूँट कभी-कभी किमी मग्न न्वाक धाकमे टूट जाता है और उडकर चान्ना किणोको हटाता हुँडे, उनके मुखपर जा गिरता है । उस शान्त मुखमण्डलपर एक हल्का-सो रँपकँपा लहग जाती है ।

मै इस मौन्त्यमें डूब-ना गया हूँ । लगता है तन-मन और प्राणपर एक नग-ना ठा गया है । न्नाके टन धाकाका तरह विचारोंके हलके-हलके धाक मर मस्तिष्कम भा किमी अनगन दगमे न जाने कितनी मन्ना और नगीला सुगन्धि चुगपे हुए आ रहे ह । कभी-कभी किमी मग्न शक्तिमे न्म खिन्नीकी ओगीनापर



लम्बा हुइ जल्की वूँदाकी तरह ही मेरी नाज़ुफ़ भावनाएँ टूट जाती ह । एक सिहरन नेती है और बम फिर वही क्रम । कितना सुन्दर चोंद है ?

क्या प्यार इस चोंद सा नगा है जो निरागा और एकाकापन क करारे बादलाको हटा आदमाकी जिन्दगीकी नीला आसमानी घाटोमें चमक उठता है ? क्या कामनाआ और टच्छाआकी सर्प भरी नूनिया इन भाँगे हुए पड पटलवाकी भोंति ही ग्रामोग सिर झुकाये सो नहा जाती, तृप्ति बन बनकर बरसता हुइ वन शीतल किरणो म ? जिन्दगीका फूल भरी अँधेरी घाटीमें क्या प्यारको चोंदकी किरणें सुनहरी तितलियाँ-सी बरस नहीं पडता और सपनाकी हर पॉखुरीपर मगलमयी आकाशाआकी किरणें थिरक नगीं उठतीं ? प्यारकी चोंदनी कितनी मखुर है, प्यारक हर भाकेम कितना नगा है, प्यारकी रागिनीम कितनी मस्ती है । मेरे इन विचाराम कुठ यत्रधाग पड रहा है । इस नम टढा हजाम कौपती हुई एक सगीतकी माटी लत्र आ रही हे । बगलके डत्रम कोइ मस्तीमें भरा हुआ गा रहा है

अपने पिया सन बोला गुजरिया

हमें लागला नाक उजरिया ना-

इम गानेम इस वातावरणम चारां ओर नादका सखर है । चारा ओर मव नादक नशम झूम रहे ह । लगता है जैसे मे भी जो कुठ सोच रहा हूँ वह नात्रम और एमा नींदमें जिमम बहुत प्यारे प्यारे सपने इट्ट धनुष-से पख पमार कर छा जाते ह । क्याकि यह सत्र गन्त है । मेरे इन विचाराम कल्पना हा कल्पना है । चिनमे मुझे

चिह्न है यद्यपि मेरे वेहोगीक क्षणमें ये मुझपर ऐसी छा जाती है कि मैं मारा वास्तविकता भूल जाता हू ।

मेरे बगलम जो सो रही है, यह मेरी दूरके गिश्तेकी बडी बहन है । उनकी ओर देखते ही विचारोका एक सस्त भ्रोक आ जाता है । और प्यारके प्रति कल्पनासे सँगरी हुई मेरी मासूम नाजुक भावना टूट मी जाती है । आजमे चार वर्ष पहले उहोने भी किसी को प्यार किया था । मैं सोच सकता हूँ, स्त्री होनेके नाते और दिव्यविद्यालयकी उच्चतम कक्षामें साहित्यकी विद्यार्थिनी होनेके नाते प्यारके प्रति उनके भी सपने बडे रगीन रह होंगे । उनही रगीनी तितलाके पखा या इन्द्र धनुपके रग' सी क्षणिक नहीं रही होगी । तभी तो उन्हाने अपने प्यारके मासूम सुकुमार दीपकको समाजकी ओंधामें रग लिया । सोनेका चमकमें खोयी हुई धनवान् पिताकी ओंधामें भी धूलकी ढेरीकी ओर देखना पडा, निम्न उनकी प्यारी लडली बेगीकी मुमकान चमक रही था । लखपती लडकेको छोड कर उमी लडकेमे उहें शादी करनी पडी । उनका विवाह हो गया—प्रेम विवाह ।

मुझ याद आती है विवाहके पहलकी एक रात, जब टारनिंग ग्रेजिल पर सत्र बैठे थे । पिताने गरामकी घूँट गलके नाचे उतागते हुए उनकी ओर घूर कर दग्ना था और उड टु गी म्थरमें गाल ये, "पठताओगा रूपा । प्यार आत्मिक सम्बन्ध हो सकता है पर विवाह आर्थिक सम्बन्ध है । प्यार नहीं, रुपया ज़रूरी है विवाहके लिए । तुम्हें आगे चकर रुपयेकी कमा खनगा और तब यना प्यार खोखला लगने लगेगा । यह एक क्षणिक भावना है

जिसमें आकर तुम सब चाज़ पर ठोकर भार रहा हो ; आन तब कोइ भी 'लव मैरिन' मेरे सामने एमा नहा आया है चिमका अत असफल या दुग्मान्त न हुआ हो ।”

इन्होंने उत्तर दिया था, 'हो सकता है, पिता जी, लेकिन मेरा विश्वास है कि प्यार अभावाम भा सुगी रू सकता है । मैं हर परिस्थितिमें रह लूंगी और आप मुझे प्रसन्न ही देखेंगे । धनक बंधनम प्रियाहका बंधना प्रियाहका अपमान करना है । प्रियाहके लिए धन नहा प्यारका जरूरत है । आप मुझे क्षमा करेंगे ।”

इसके आगे वे कुछ बोल नहीं ये । तना कहते हुए उठ गये व कि “तुम मिद्धात कह रनी हो—क्रियात्मक जगत्तम यह सब एमा नहा होता ।”

मुझे लगता है जैसे वाम्तरम क्रियात्मक जगत्तम एसा नहा होता । प्यारका नशा भावुकताकी मदिराका परिणाम है । भावुकता समाप्त होते हा प्यारका नशा उखड जाता है । भावुकता चिरमथाया नहा होता । उसका निमाण और आन हर क्षण प्रत्याशित है । इमीणिण प्यारके अस्तित्व पर विश्वास नहा क्रिया जा सकता । यही कारण है कि अनेकानेक प्रम प्रियाह कुछ साला बाद रुये सूखे प्रियाह रू जाते हैं । एसे प्रियाह जो गल्म मौतक फंटे-से लगते हैं । नुत-से एसे प्रियाह भा उताहरणाथ मरा आँखोंके सामने आना चाहते हैं, जहाँ प्रारम्भका प्रम अतम इतना घृणाम परिवर्तित हो गया कि एरु दमरे पर चान द देनेक स्थान पर जान ल लेनेका रात तब सोचा जाने लगा । लेकिन म य सब प्रिचार अपना आग्याके सामने आने नहा दना चाहता । मानना

हूँ यह मेरी कमजोरी है क्योंकि प्यारके लिए मेरे हृत्पत्र एक इतना मोम पदार्थ है जो किसी तरह भी उनका भयङ्कर उदाहृत्ता सुगन्धार वस्त्ररूप रूप देखना नहीं चाहता और न उन पर प्रकीर्ण ही कर सकता है। फिर भी उनका वास्तविक रूप मेरे निमागमें गिन्ना हुआ है। इस समय मेरी अवस्था ऐसी नहीं है कि मैं इसपर निश्चित रूपसे कुछ सोच सकूँ। मैं घबरा गया हूँ। एक ओर तो मेरा हृत्पत्र पत्र बहुत प्रयत्न हो गया है और हमरी ओर कुछ तानी घटनाआके कारण मेरा मस्तिष्क पत्र भी प्रयत्न है। मैं नहीं चाहता कि मैं इस समय विद्वुत्त भा इस विषय पर माचूँ लेकिन न चाहने पर तो विचार और भी तेजीसे आते हैं। मेरे एक मित्र ह जो स्वभावसे बहुत कुछ रुचि है। स्वच्छल लापरवाह प्रकृति। इसका कृपामे घनका अभाव उनका पान नहीं। चित्रकलाके प्रयत्नक है और चित्रकारीमे कुछ शौक भी है उन्हें। उनका प्रेम प्रियाह हुआ। उनकी पत्नीका प्रकृति ठीक उनकी-सी है। वह एक सुगन्ध संगीतना और वादिका है। स्वच्छलता और लापरवाहा उनकी नम-नममें भी है। बहुत दिनामे मैं यह जाननेकी कोशिशम था कि आखिर उनका प्यार कहाँसे शुरू होता है। वह तीन-मा स्थान है जहाँ वे दोनों एक दूसरेको प्यार करते हैं। क्योंकि मेरे सामने वे हमेशा झगड़ते हैं। उनका थगड़े पत्रे नहीं होते थे निमकी तरहमें प्यार हो, अपितु भयानक उपमा होनी था उनका तहम। उनके इस तरहके व्यवहारमे मैं बहुत दिना तक बहुत परेशान रहा, क्योंकि उन दिना मैं सोचता था कि प्रेम प्रियाका ही अमफल्ताका कारण आर्थिक है। लेकिन यहाँ तो उनका प्रान ही

न उठता था। इधर एक दिन मुझे मालूम हुआ कि वे दोनों अलग हो गये हैं और अलग-अलग रहने लगे हैं। इतना मनमुग़ाज बढ जानेपर आश्चर्य हुआ। उनसे मैं फौरन मिला। कुछ अनजान बतते हुए मने पृछा, “भाभी कहाँ ह ?”

“उनका बात मत कर, रज्जन”, उन्होंने बहुत दुग्गा और खिन्न होते हुए कहा।

“क्यो? क्या अब वह जो विवाहके पहले थीं नहा ह? जिनके ऊपर तुम तन, मन, धन सब निछापर किये हुए थे। जिनके एक नशानके हेतु तुम स्वर्गके देवताआको भी दुकरा समते थ। वह प्यारका अमरता निसपर अखड विश्वास था क्या एक कोरा सपना ही था ?”

“यह अजीब बात म तेरे मुँहसे सुन रहा हूँ।” वह क्षण भर चुप रहे फिर बाले “पर अजीब नहीं, सत्य है यह। उहे अब मुझमें निलकुल रुचि नहा रह गयी था। मेरी निलकुल परवाह उहे न थी। निगाहके पहल वह अपनेसे अधिक मुझे प्यार करता थी और अब वह मुझसे अधिक अपनेको प्यार करती ह। उहे मेरा स्याल निलकुल नहा रह गया है। वह अपनी धुनम हा मस्त रहती है, अपनेसे नटकर शायद वह और कुछ स्याल करना भी नहीं चाहती।”

मैं कुछ समझ न सका। कुछ ही दिना बाद मै उनकी पत्नासे मिला। वह चित्र उस समय मेरा आँगाके सामने नतना स्पष्ट खिच गया है कि इस वातावरणका प्रभाव धूमिल-सा हो गया है। एक पयताय स्थानपर उहाने एक सुदर सा बँगला ले रखा था जो